रवीन्द्र-संगीत-सुधा

(भाग - १)

*

संकलित-पूजा-गीत

(मूल बाग्ला सहित)



हिन्दी गीतान्तरण

दाऊलाल कोठारी

प्रकाशक

सचेतन प्रकाशन कोलकाता

प्रकाशक
सचेतन प्रकाशन
१६०, महात्मा गाँधी रोड,
कोलकाता ७००००७
मूल्य साठ रुपये

प्रथम सस्करण अप्रैल २००२
प्रतियाँ २०००

मुद्रक प्रिन्टो ट्रेड्स
३८, बी के पाल एवेन्यू,
कोलकाता ७००००५

Ravindra Sangeet Sudha
(Tagore Songs in Hindi)
by Daulal Kothari

समर्पण

जिनके

स्वागत के लिये

सीखा था

रवीन्द्र-सगीत-गीतान्तर

उन

ब्रह्मलीन गुरु

परम सत

प मिहीलालजी शर्मा

के चरणो मे

सादर

प्राक्कथन

श्री दाऊलाल कोठारी से मेरा प्राय बीस वर्षो से अन्तरग सम्बन्ध रहा है। आनन्द की बात है कि हमारी प्रथम भट रवीन्द्र-गीतो के हिन्दी अनुवाद के सदर्भ मे ही हुई। रवीन्द्र-सगीत के स्वर इनके हृदय मे सदा गुजायमान रहते एव बाग्ला गीतो को गुनगुनाते हुए वे अनवरत उनके भावो के भीतर जाने का प्रयास करते रहते। पहली बार मिलने पर उन्होने ९ गीतो के अनुवाद मुझे सुनाये थे तभी मुझे लगा कि इनका कार्य मात्र अनुवाद नही है। रवीन्द्र-सगीत का मर्म इनके हर पद के अनुवाद मे झकृत है और प्रभावशाली ढग से अभिव्यक्त भी हो रहा है। इनके प्रत्येक पद के अनुवाद मे रवीन्द्र-सुर की आभा विलक्षण रूप से उद्भासित हुई है अत मै इन्हे मात्र अनुवाद न कह कर गीतान्तरण कहना अधिक समीचीन समझता हू। वैसे तो कई विख्यात लेखको ने रवीन्द्र-गीतो के बहुत सुन्दर अनुवाद किये है जिनमे अर्थ भाव एव चिन्तन पूर्णत अभिव्यक्त हुआ है लेकिन वे रवीन्द्र-सगीत की धुनो मे नही गाये जा सकते। वास्तव मे ऐसा गीतान्तरण हिन्दी के लिए एक नई विधा है जिसमे शब्द और स्वर की, सुन्दर सयुति हुई है।

कोठारी जी ने यह कार्य पूरी लगन व निष्ठा तथा कविगुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से किया है। इसके लिए मूल एव अनुवाद की भाषा की जानकारी ही पर्याप्त नहीं। इसम कवि की विशिष्ट भावभूमि से जुडना होता है और ऐसा होने से ही अनुवादक गीत के

मर्म का गीतान्तरण कर सकता है। वस्तुत यह साधना से ही सम्भव होता है। मेरे विचार से यही कारण है कि बाग्ला मे गाये गये रवीन्द्र-गीतो के साथ साथ इनके हिन्दी गीतान्तरण को सुनने से हर कोई समानान्तर आनन्द प्राप्त करता है। इस दृष्टि से श्री कोठारी का रवीन्द्र-सगीत-गीतान्तरण एक अत्यन्त सफल प्रयास हुआ है।

रवीन्द्रनाथ ने अपने हर गीत की भावानुरूप स्वरलिपि निश्चित की है और आजतक वे उसी प्रकार गाये जाते है। रवीन्द्र-सगीत अपने आप मे एक अनुपम विधा है जिसमे शास्त्रीय, सुगम, लोक, बाउल तथा कही कही विदेशी सगीत भी सुनियोजित है। श्री कोठारी ने इस अनुशासन का पूरी तरह निर्वाह किया है। रवीन्द्र-पदो का अनुवाद करना उनके लिए साधना ही नही नित्य कर्म बन गया है और वे अपने गीतान्तरण को शब्द भावाभिव्यक्ति एव चिन्तन की दृष्टि से सदा परिष्कार करते रहे है।

कलकत्ता म अनेक आयोजनो मे इनके गीत भाव-नृत्य के साथ प्रस्तुत हुए है। एक कार्यक्रम मे रवीन्द्र सगीत के स्वनामधन्य गायक हेमन्त कुमार ने बाग्ला गीत गाए और उनके समक्ष उन्हीं गीतो की हिन्दी में प्रस्तुति कोठारीजी के कलाकारों ने की। इसके अलावा भारत के कई प्रमुख शहरो राची, जमशेद्पुर पटना, वाराणसी भोपाल, ग्वालियर जबलपुर दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद विशाखापट्टनम् व पाडिचेरी आदि मे इनके गीतो की प्रस्तुति हुई है। इन सब स्थाना में य आयाजन बहुत सराहे गये। विदेश मे भारतीय विद्या भवन लदन मे भी इनका कार्यक्रम प्रशसित हुआ।

अनुवादित गीतो म शब्द और स्वर का विलक्षण ताल मेल देखकर देश के विख्यात गायक पद्मश्री मना दे श्री अनूप जलोटा, श्रीमती आरती मुखर्जी व श्रीमती अनुपमा देशपाण्डे ने इनके अनुदित गीत गाये है। बाग्ला हिन्दी व अग्रेजी के बहुतेरे पत्र-पत्रिकाआ एव साप्ताहिको ने इनके गीतान्तर की प्रशस्ति की है।

बडी प्रसन्नता की बात है कि वर्षो से हिन्दी मे गाये जाने वाले इनके रवीन्द्र-गीतो का प्रथम भाग, आज पुस्तकाकार म प्रकाशित हो रहा है जिसमे गुरुदेव के पूजा-गीत सकलित है। इनम प्रसिद्ध गीत तूमि केमन कॅरे गान करो ह गुणी का हिन्दी रूपान्तर

तुम कैसे सुर मे गा रहे, हे। गुणी,
मै तो अवाक् होके सुनूँ, केवल सुनूँ।
सुर की आभा छाये भुवन मे सुर की हवा बहे गगन मे।
पत्थर टूटे व्याकुल वेगो मे बहे जा रही सुर की सुरधुनि।'

सुनकर हम वास्तव मे भाव भिवोर, मत्र मुग्ध एव अवाक् हो जाते है। उसी तरह कविगुरु का वह मार्मिक गीत जिसमे उन्होने प्रभु से करुणाधारा के रूप मे आने का निवेदन किया –

जीवन जब सूख जाय करुणाधारा मे आओ
माधुरी सब जा छुप जाय गीत-सुधा बन आओ।।

एव सवेदनशील गीत ' चरण धरिते दियो का अनुवाद–

चरण-स्पर्श कर पाऊँ मै भी करो न, करो न दूर मुझसे,
जीवन मरण म, सुख और दुख म रखूँ मै लगाय हृदय स।।

और निवेदन गीत अन्तर मम विकसित करो का गीतान्तर

विकसित कर मेरा अन्तर अन्तर-तर हे,
निर्मल कर, उज्ज्वल कर सुन्दर कर हे।।
जाग्रत कर, उद्यत कर, निर्भय कर हे।
निरलस नि सशय कर, मगल कर हे।।

–और भी किन-किन का उल्लेख किया जाय सभी के गीतान्तरण मे रवीन्द्र के भाव सम्यक् रूप से प्रस्तुत हुए है।

रवीन्द्र के पूजा-गीत कोठारीजी को प्रिय ही नही, वे इनके पाथेय है। गीतो मे निहित भाव इनके जीवन के मात्र आदर्श नही, इनके जीवन के अग बन गये है। जो भी रवीन्द्र-सगीत से लगाव रखते है, उनके लिए, अनुशीलन की दृष्टि से 'रवीन्द्र-सगीत-सुधा अत्यन्त उपयोगी होगी। रवीन्द्र-सगीत के प्रेमी तो निश्चित रूप से इन गीतो को गा गाकर आनन्दित होगे। हिन्दी जगत मे रवीन्द्र-सगीत को लोकप्रिय बनाने का श्रेय अवश्य ही इस पुस्तक को जायेगा।

पुस्तक के परिशिष्ट मे जुडे 'समर्पण-गीत श्री कोठारी ने रवीन्द्रनाथ से प्रेरित होकर बडी श्रद्धा और आत्मीयता से लिखे है। बाग्ला भाषा के रवीन्द्र-सगीत के सौरभ को हिन्दी भाषा मे गीतान्तरण का कार्य जो श्री दाऊलाल कोठारी न किया है इसके लिए वे साधुवाद के पात्र है। जैसे जैसे समय बीतेगा इन गीतो की उपादेयता निरन्तर वर्धमान रहेगी, ऐसा मरा मानना है।

१७, शेक्सपीयर सरणी
कालकाता-७०० ०७१ जय किशनदास सादानी

प्रस्तावना

रवीन्द्र-सगीत की बात जब भी कहीं आती है तो शब्द व स्वर के अद्भुत समन्वय सहित देशी विदेशी शास्त्रीय व लोकधुनो को समेटे हुए मधुर मीठे स्वर, स्मृति म गूज उठत है। शब्दो के भाव इतने सूक्ष्म होते है कि उन्हे समझनेवाला हर श्रोता अन्तर मे कही न कही उनसे स्वय को जुडा अनुभव करते हुए आनन्द मे अभिभूत होता है। ऐसा कविगुरु के सभी प्रकार के गीता म होता है पर यहा हम उनके पूजा गीतो पर चर्चा करेगे।

महाकवि ने अपने ईश्वर परक गीता को पूजा-गीत कहा है क्योकि इनमे ज्ञानी को ज्ञान भक्त को भक्ति साधक को साधना एव दार्शनिक को दर्शन के तत्व मिलते है। ज्ञानी को लगता है कि किसी ने उसे वेदो व उपनिषद आदि के गूढ ज्ञान को रस सिक्त कर परोस दिया है भक्त को लगता है कि वह मूर्त्ति के पीछे छिपे अरूप की रूप-माधुरी का रस पी रहा है, साधक को उनमे साधना के पथ व अनुभव दिखते है तथा दार्शनिक को उनमे दर्शन के छिप रहस्य खोलकर सगीतमय कर दिये गये लगते है। वैसे भी देखा जाय तो पूजा कोई कृति नही वरन् स्थिति है और रवीन्द्र के ईश्वरीय गीत चूकि भक्ति आत्मज्ञान एव साधना की स्थिति व अनुभव का पता देते है इसीलिए कविगुरु ने इनका नाम पूजा गीत रखा। उन्ही मे से कुछ सकलित पूजा-गीत रवीन्द्र-सगीत-सुधा (भाग १) मे है।

अपने गीतो की तुलना रवीन्द्र ने एक जगह अर्धनारीश्वर से की है। अर्थात् रवीन्द्र-सगीत मे शब्द स्वरो के साथ मिलकर शिवा

व शिव की तरह परस्पर पूर्णता प्रदान करते है। तात्पर्य यह हुआ कि विशिष्ट स्वरो के आरोह-अवरोह मे ही कविगुरु के शब्द अपने भीतर के भावा को पूर्णतया सम्प्रेषित करते है और दखा भी गया है कि रवीन्द्र-सगीत मे भावलीन गायक और शान्तचित्त श्रोता दोनो, स्वर एव शब्दो के परे, एक अतीन्द्रिय आलोक की भावभूमि पर अनायास सैर करते होते है। स्थिति ऐसी है कि भाषान्तर म भी, यदि शब्द रवीन्द्र-मान के न हो तो मन उन्हे नही मानता और स्वर भी यदि वही सगीत-सूक्ष्मता व माधुरी लिये न हो तो कान उन्हे स्वीकार नही करते। जाने-अनजाने, बगाली या गैर-बगाली सभी रवीन्द्र-सगीत प्रेमी कविगुरु के भाषान्तरित गीत मे भी आरोह-अवरोह के साथ शब्द-स्वर-समन्वय एव सगीत की वैसी ही माधुरी, दोनो चाहते है।

कहते है किसी भी भाषा की कविता का सामान्य अनुवाद भी कठिन है फिर कविता का कविता मे तो और कठिन, गीत का गीत मे और भी कठिन, और गीत का उसी स्वरसहित दूसरी भाषा मे भाषान्तर तो, अत्यन्त कठिन है। उसमे भी जब हम रवीन्द्र-गीतो को लेते है तो अपने विशिष्ट स्वरालाप मे वह एक अलग विधा ही है, जिसका नाम लोगो ने श्रद्धापूर्वक रवीन्द्र-सगीत रख दिया है। तथ्य यह भी है कि रवीन्द्र का शब्द–शिल्प इतना बहु-आयामी है कि उसकी पूर्ण तह तक जा पाना, सौभाग्य की बात है। सामान्य से शब्द इतना गम्भीर अर्थ रखते है कि उनकी व्याख्या करने मे विद्वानो को भी सोचना पडता है। इसके अलावा गीत मे शब्दों के साथ स्वरो का इतना गहरा सबध है कि यदि कोई महाकवि के प्रति

पूजा भावना से भाषान्तर करने का सोचे, तो उसके स्वय के ही मन एव कान उसे बारबार टोकते रहते है। भाषाविदो के अनुसार एक भाषा का गीत दूसरी भाषा मे आ ही नही सकता और यदि ऐसा हो जाय तो इसे विख्यात कवि Ezra Pound ने Divine Accident या भगवत्कृपा कहा है। कृपा के चलते ही साहित्य मे ऐसे उदाहरण मिलते है जब मूल भावो मे तन्मय अनुवादक ने अपनी भाषा मे भी लगभग वही काव्य व गीत छटा उतारी हो।

रवीन्द्र सगीत सुनते एव उसमे डूबते हुए विगत पच्चीस वर्षों के भाषान्तर-प्रयास मे मै कविगुरु के करीब १०० गीतो का हिन्दी-गीतान्तरण कर पाया हूँ जिनमे पूजा-गीत लगभग ६० है। कविगुरु की स्वरलिपि मे गाये जाने वाले इन गीतो मे भाव एव स्वरो के अनुरूप शब्द चयन का आदर्श यह रहा है कि गीत हिन्दी मे सुनकर श्रोता का मन मूल बाग्ला से स्वय को आत्मसात अनुभव करे। पास ही नागरीलिपि मे मूल बाग्ला गीत के बोल देकर मैने श्रोताओ और पाठको को तुलना करने का अवसर दिया है। ऐसा करने का एक उद्देश्य यह भी है कि यदि कोई गैर बगाली भी बाग्ला गीत सुने तो वह नागरीलिपि मे लिखे बोल देखकर उसे समझ सके तथा यदि वह उसी गीत को हिन्दी मे भी सुन तो वह उसके भाव एव शब्द-स्वर-समन्वय को अनुवाद मे पाने का प्रयास करे।

फिर भी भाषान्तर मूल के एकदम अनुरूप नही हो पाता और ऐसा तो होता ही है कि कही किसी शब्द का और अच्छा विकल्प सम्भव हो। ये अनुवाद मूलत स्वर प्रधान है अत उनमे बैठता मधुर शब्द-विकल्प यदि विज्ञ श्रोताओ के मस्तिष्क मे कभी कौंध

जाय, तो कृपया मुझे अवश्य लिखे ताकि भविष्य मे उस पर विचार सभव हो।

रवीन्द्र-सगीत-भाषान्तर करते हुए मैंने भी अपने भावो को शब्द व स्वर देकर गीत लिखे जिनमे से कुछ, समर्पण-गीत नाम से पुस्तक के अन्त मे दिये गये है। उनमे कविगुरु के सगीत एव चिंतन का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। यह गुरुदेव के प्रति मेरी अपनी भावाजलि है।

गीतो के इस स्वरूप तक पहुँचने मे मुझे बहुत से विद्वानो, रवीन्द्र- रसिको एव गायको से मार्गदर्शन मिला है जिनमे श्री जयकिशन दास सादाणी एव प्रख्यात कवि आचार्य शख घोष अग्र-गण्य है। इनका एव इनके अलावा और भी जिन्होने इस पुण्य कार्य मे किसी भी प्रकार से समय-समय पर मुझे सहयोग दिया है, उन सबका मै अत्यन्त आभारी हू।

अपना अमूल्य समय निकालकर पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के लिए श्री जय किशनदास सादाणी का मै विनत आभार मानता हूँ।

कोलकाता
७ अप्रैल २००२

दाऊलाल कोठारी

अनुक्रम (बांग्ला मूल)

अनुक्रम (हिन्दी गीतान्तर)

रवीन्द्र सगीत—जो मैने जाना

वेद, उपनिषद्, दर्शन ऋतु-रग प्रेम-विधाएँ,
देशभक्ति, सस्कृति और जीवन, रवि के गीत सिखाये।।

रवि से चित्रित कला स्वयम्
रवि से भाषित काव्य स्वयम्
भाषा रवि से धन्य स्वयम्, स्वयम् गीत बन जाये।। वेद।।

देश-विदेश की धुने मिली, मिले राग रागिनियो के स्वर,
विश्व-हृदय से जुडे रवीन्द्र रवि-सगीत बना सब मिलकर।

सब के ऊपर मानुष सत्य
'जीवन देवता'' एक ही सत्व,
उठो, जागो, हे अमृत पुत्रो! रवि के गीत जगायें ।।

दाऊलाल कोठारी

भूमिका-गीत

(गीति-काव्य सकलन 'गीत वितान' मे रवीन्द्र द्वारा लिखित)

प्रथम युगर उदयदिगगन
प्रथम दिनेर ऊषा नेमे एलो जबे
प्रकाशपियासी धरित्री वने वने
शुधाये फिरिलो सुर खूजे पाबे कबे।। प्रथम ।।

एसो एसो सेई नवश्रृष्टिर कवि
नवजागरण युग प्रभातेर रवि–
गान एनेछिलेनव छन्देर ताले
तरुणी ऊषार शिशिरस्नानेर काले
आलो आधारेर आनन्दविप्लवे।। प्रथम ।।

स गान आजिआ नाना रागरागिनीते
शुनाओ ताहार आगमनी सगीत
जे जागाय चोखे नूतन-देखार दखा।।

जे ऐसे दाँडाय व्याकुलित धरणीते,
वननीलिमार पेलब सीमानाटिते
बहु जनतार माझे अपूर्व एका।
जे जागाय चोखे नूतन देखार देखा।।

अवाक आलोर लिपि जे बहिया आने
निभृत प्रहरे कविर चकित प्राणे
नव परिचये विरह व्यथा जे हाने
विह्वल प्राते सगीत सौरभे
दूर आकाशेर अरुणिम उत्सवे। प्रथम।।

भूमिका-गीत

(गीति-काव्य संकलन 'गीत वितान' में रवीन्द्र द्वारा लिखित)

प्रथम युग की उदय दिशा मे
प्रथम दिन की ऊषा, आँगन मे उतरी जब,
वनो मे प्रकाश की प्यासी धरा
फिरी थी पूछती सुर मिलेगा कब।। प्रथम।।

आओ हे आओ! उस नई सृष्टि के कवि
नई जागृति के युग-प्रभात-रवि
लाये थे तुम गीत, नये छन्दो, तालो मे,
तरुणी ऊषा की शिशिर-स्नान-वेला मे,
प्रभा तिमिर के आनन्द-उत्सव मे।। प्रथम ।।

वो गीत, विविध राग-रागिनियो मे
सुनाओ आज भी आह्वान-गीतो मे
उसे दृष्टि जो नई, जगाये नयनो मे।

जो अवतरित हो, व्याकुल धरा पर
वन-नीलिमा की मृदु सीमाओ पर
अकेला, अपूर्व, बहुजनो मे
जो नई दृष्टि जगाये नयनो मे।

अवाक् आलोक की जो लिपि ले आये,
एकल पल मे चकित-कवि–हृदय मे,
विरह व्यथा जो नये रूप मे बताये
स्वर-सौरभ मे, विह्वल सवेरे
दूर आकाश के अरुणिम उत्सव मे।। प्रथम।।

सुरेर गुरु दाओ गो सुरेर दीक्षा

सुरेर गुरु, दाओ गो सुरेर दीक्षा–
मोरा सुरेर कागाल एइ आमादेर भिक्षा।।

मन्दाकिनीर धारा, ऊषार शुकतारा
कनकचाँपा काने काने जे सुर पेलो शिक्षा।।

तोमार सुरे भरिये निये चित्त
जाबो जेथाय बेसुर बाजे नित्य।

कोलाहलेर वेगे घूर्नि उठे जेगे,
नियो तुमि आमार वीणार सेइखानेइ परीक्षा।।

सुर के गुरु, दे सुर की दीक्षा

सुर के गुरु दे सुर की दीक्षा,
हम सुरो के भिखारी, यही हमारी भिक्षा।।

मन्दाकिनी की धारा, ऊषा का शुक्रतारा,
कनक-चम्पा कानो मे पाए जिस सुर की शिक्षा।।

तेरे सुर से अपना चित्त भर के,
जाये जहाँ बेसुर नित्य बजते।

हो तुमुल कोलाहल, चक्रवात भीषण,
मेरी वीणा की तुम वहीं पर लना फिर परीक्षा।।

तोमार सुरेर धारा

तोमार सुरेर धारा झरे जेथाय तारि पारे
देबे कि गो बासा आमाय एकटि धार ?

आमि शुनबो ध्वनि कान
आमि भरबो ध्वनि प्राण,
सेई ध्वनिते चित्तवीणाय तार बाँधिबो
बारे बारे।।
आमार नीरव वेला
सेइ तोमारि सुरे सुरे
फूलेर भितर मधुर मतो उठबे पूरे।

आमार दिन फुराबे जँबे,
जखन रात्रि आँधार हँबे,
हृदये मोर गानेर तारा उठबे फुट
सारे सारे ।।

तेरे सुरो की धारा

तेरे सुरो की धारा झरे जहाँ, उसी धरा पर
ठाँव मुझे मिलेगी क्या इक किनारे ?

ध्वनि मै सुनूँगा, कानो मे
ध्वनि मै भरूँगा, प्राणो मे,
उसी ध्वनि म तार बाधूँगा, चित्त-वीणा मे,
बार-बार।।
मेरी नीरव वेला
तेरे उन्ही स्वरो से फिर
फूलो मे ज्यो भर मधु त्यो भर जाएगी।

जब दिन ढलेगा मेरा,
जब रात अँधेरी होगी,
हृदय के नभ मे उगेगे, मेरे गीतो के
तारे सारे।।

तुमि केमन कॅरे गान कॅरो हे गुणी

तुमि केमन कॅरे गान कॅरो हे गुणी,
आमि अवाक् होये शुनि केवल शुनि।।

सुरेर आलो भुवन फैले छेये,
सुरेर हावा चले गगन बेये
पाषाण टूटे व्याकुल वेगे धेये
बहिया जाय सुरेर सुरधुनि।।

मने करि अॅमनि सुरे गाइ,
कण्ठे आमार सुर खुँजे ना पाइ।

कइते की चाइ, कइते कॅथा बाँधे ,
हार मेने जे परान आमार काँदे
आमाय तुमि फेलेछो कोन् फाँदे
चौदिके मोर सुरेर जाल बुनि।।

तुम कैसे सुर मे गा रहे हे गुणी

तुम कैस सुर मे गा रह ह। गुणी,
मैं ता अवाक् होके सुनूँ, केवल सुनूँ।।

सुर की आभा छाए भुवन मे
सुर की हवा बहे गगन म,
पत्थर टूटे व्याकुल वगा म,
बहे जा रही, सुर की सुरधुनि।।

मन करता है, वैस सुर मे गाऊँ,
कण्ठ म सुर, खाज नही मै पाऊँ।

कहना है क्या, कण्ठ रूध कहत,
हार मानकर प्राण मेरे रोयें
मुझ पर तुमने डाले कैसे फन्दे
चहुँ ओर मेरे सुर की जाली बुनी।।

आमि तोमाय जॅतो शुनिये छिलेम गान

आमि तोमाय जॅत शुनिये छिलेम गान
तार बदले आमि चाइ ने कोनो दान।।

भुलबे से गान यदि ना हॅय जेयो भुले
उठबे जॅखन तारा सन्ध्या-सागर-कूले,
तोमार सभाय जॅबे करबो अवसान
एइ क'दिनेर शुधु एइ क'टि मोर तान।।

तोमार गान जे कॅतो शुनिये छिले मोरे
सेइ कथाटि तुमि भुलबे केमॅन कॅरे ?

सेइ कथाटि कवि, पडबे तोमार मने
वर्षा-मुखर राते, फागुन समीरणे—
एइटुकु मोर शुध रॅइलो अभिमान,
भुलते से कि पारो भुलियेछो मोर प्राण।।

तुम्हे सुनाए थे मैने जो भी गान

तुम्हे सुनाए थे मैने जो भी गान
उनके लिए मैने कोई न चाहा दान।।

यदि वे गीत भूलो, तुम भले ही भूलो
खिलेगे जब तारे, सध्या-सागर-तीरे।
मै तेरी सभा मे, करूँगा अवसान,
इन्ही कुछ दिनो के, ये कुछ मेरे तान।।

अपने कितने गाने, तुमने सुनाये थे
बोलो कैसे उसे, तुम भूल पाओगे ?

कवि! वे सारी बाते याद आएँगी तुम्हे
बरखा की रातो मे फागुनी हवाओ मे,
बस यही एक मेरा बचा है अभिमान
भूलोगे क्या यह भी ? भुलाये मेरे प्राण।।

अरूप, तोमार वाणी

अरूप, तोमार वाणी
अगे आमार चित्ते आमार मुक्ति दिक् से आनि।।

नित्यकालेर उत्सव तव विश्वेर दीपालिका–
आमि शुधु तारि माटिर प्रदीप ज्वालाओ ताहार शि
निर्वाणहीन आलोकदीप्त तोमार इच्छाखानि।।

जेमॅन तोमार वसन्तबाय गीतलेखा जाय लिखे
वर्णे-वर्णे पुष्पे-पर्णे वने-वने दिके-दिके।

तेमनि आमार प्राणेर केन्द्रे निश्वास दाओ पूरे,
शून्य ताहार पूर्ण करिया धन्य करुक सुरे
विघ्न ताहार पुण्य करुक तव दक्षिणपाणि।।

अरूप हे ! वाणी तेरी

अरूप हे ! वाणी तेरी
मुक्त करे चित्त मेरा और देह मेरी।।

काल के नित उत्सव, तेरे विश्व की दीपालिका,
मै हूँ केवल माटी का दीप, जला दो यह शिखा,
जो न बुझे, उसी मे हो दीप्त इच्छा तेरी ।। अरूप ।।

जैसे तेरी वसन्त-वायु गीत लिखे रगो मे,
पुष्पा म पत्तो मे, वना म और दसा दिशाओ मे।

वैसे मेरा प्राण-केन्द्र, भरो ऐसी सास से
शून्य करे जो पूर्ण और स्वर से धन्य करे,
विघ्न सभी शान्त करे तेरा वरद पाणि।। अरूप।।

आमार वेला जे जाय

आमार वेला जे जाय साँझ वेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ।।

एकताराटिर एकटि तारे
गानेर वेदन वइते ना रे,
तोमार साथे बारे बारे
हार मेनेछि एइ खेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ।।

(आमार) ए तार बाँधा काछेर सुरे
ओई बाँशि जे बाजे दूरे।

गानेर लीलार सेइ किनारे
योग दिते कि सबाई पारे,
विश्व - हृदय - पारावारे
राग-रागिनीर जाल फेलाते -
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ?

मेरी वेला बीते, साँझ - वेला मे

मेरी वेला बीते, साँझ - वेला मे
तेरे सुर मे मेरे सुर मिलाते।।

इकतारे का इक तार ये,
सुर की व्यथा कैसे सहे,
बार ही बार मानी है हार,
तुमसे मैने, इस खेल मे,
तेरे सुर मे मेरे सुर मिलाते।।

(मेरे) इस तार मे सुर पास के,
वो बाँसुरी, दूर बाजे।

स्वर-लीला के, उस कूल पे
साथ सभी क्या दे पाते
विश्व-हृदय के सागर मे,
राग-रागिनी लहराने मे
तेरे सुर मे मेरे सुर मिलाते ?

जीवनमरणेर सीमाना छाडाये

जीवनमरणेर सीमाना छाडाये,
बन्धु हे आमार, रँयेछो दाँडाये।।

ए मोर हृदयेर विजन आकाशे
तोमार महासन आलोते ढाका से
गभीर की आशाय निविड पुलके
ताहार पाने चाइ दु बाहु बाडाये।।

नीरव निशि तव चरण निछाये
आँधार-केशभार दियेछे बिछाये।

आजि ए कोन् गान निखिल प्लाविया
तोमार वीणा हँते आसिलो नाबिया।
भुवन मिले जाय सुरेर रणने
गानेर वेदनाय जाइ जे हाराये।।

जीवन मरण की सीमाओ के

जीवन मरण की सीमाओ के
पार खडे हो, बन्धु मेरे।।

मेरे हृदय के सूने गगन मे,
तेरा प्रकाशित आसन शोभे।
किस सघन-घन आशा मे पुलकूँ
और निहारूँ बाहे बढाये।।

नीरव निशि वारे तेरे चरण पे
अँधियारे की बनाये अलके।

गीत यह कैसा तेरी वीणा से
विश्व प्लावित करता निकले।
आज भुवन लीन उसी सुर मे,
भूलूँ गायन की वेदना मे।।

तोमार काछे ए वर मागि

तोमार काछे ए वर मागि,
मरण हँते जेनो जागि–गानेर सुरे।।

जेमनि नयन मेलि जेनो
मातार स्तन्यसुधा-हेनो
नवीन जीवन देय गो पूरे–गानेर सुरे।।

सेथाय तरु तृण जोतो
माटिर बाँशि होते उठे गानेर मोतो।

आलोक सेथा देय गो आनि,
आकाशेर आनन्दवाणी
हृदय माझे बेडाय घूरे–गानेर सुरे।।

तुम्हीं से यह वर माँगू

तुम्ही से यह वर माँगू,
मरण से मै जागूँ, सुन गीत के सुर।।

ज्यो ही नयन खुले, त्यो ही,
माँ के स्तन की सुधा सम
नया जीवन भरा करे, गीत के सुर।।

जहाँ धरा की बाँसुरी से
निकले तरु तृण सारे गीतो जैसे।

आलोक आये वही लिये
अम्बर की आनन्द-वाणी,
हृदय मे जो घूमे, बने गीत के सुर।।

गानेर भितर दिये

गानेर भितर दिय जॅखन देखि भुवन खानि,
तॅखन तारे चिनि, तॅखन तारे जानि।।

तॅखन तारि आलोर भाषाय,
आकाश भरे भालो बाशाय,
तॅखन तारि धूलाय धूलाय,जागे परम वाणी।।

तॅखन से जे बाहिर छेडे अन्तरे मोर आशे
तॅखन आमार हृदय काँपे तारि घासे घासे।

रूपेर रेखा रसेर धाराय
आपन सीमा कोथाय हाराय
तॅखन देखि, आमार साथे सॅबार काना कानि।।

गीतो के झरोखे से जब

गीतो के झरोखे से जब, देखूँ भुवन कभी,
जानूँ उसे तभी,पहचानूँ उसे तभी।।

भाषा उसीकी आलोकमयी
प्रेम से भरे आकाश तभी,
जागे उसीके रज कणो मे परमवाणी तभी।।

तभी बाहर स वो मरे अन्तर मे आये
तभी तृणो सा हृदय मेरा कॉप-कॉप जाये।

रस-धारा म रूप-रेखा
लोप हुई जाने कहॉ ?
तभी देखूँ, कानो-कान मुझसे बोले सभी।।

कँबे आमि बाहिर होलेम

कँबे आमि बाहिर हालम तोमारि गान गेये–
से तो आजके नँय, से आजके नँय।
भूले गेछि कँबे थेके आसछि तोमाय चेये–
से तो आजके नँय से आजके नँय॥

झरना जेमँन बाहिरे जाय,
जाने ना से काहारे चाय
तेमनि कँरे धेये एलेम जीवनधारा बेय–
से ता आजके नँय से आजके नँय॥

कँतोई नामे डेकेछि जे कँतोई छवि एँकेछि जे
कोन आनन्दे चलेछि तार ठिकाना ना पेये–
से तो आजके नँय से आजके नँय।

पुष्प जेमँन आलोर लागि
ना जेने रात काटाय जागि
तेमनि तोमार आशाय आमार हृदय आछे छेये–
से तो आजके नँय से आजके नँय॥

जाने कब मै बाहर आया

जान कब मै बाहर आया गीत गाते तेरे,
व' तो आज नही, वो आज नही।
भूल गया, चलता हूँ कबसे निरख निरख तुम्हे,
वो तो आज नही, वो आज नहीं।।

झरना जैसे बहता जाये,
जान नही वह किसे चाहे
वैसे मै जीवन-धारा मे आया बहते हुए,
वो तो आज नही वो आज नही।।

कितने नामों से पुकारा, कितने चित्रो मे उतारा
किस आनन्द मे चलूँ, उसका पता न जाने हुए,
वो तो आज नही, वो आज नही।

पुष्प ज्यो आलोक के हित
अनजाने रात जागता नित
त्या तेरी आशा मे मेरा हृदय छाए हुए,
वो तो आज नही, वो आज नही।।

शुधु तोमार वाणी नय गो

शुधु तोमार वाणी नॅय गो, हे बन्धु हे प्रियॅ
माझे माझे प्राणे तोमार परशखानि दियो।।

सारा पथेर क्लान्ति आमार, सारा दिनेर तृषा,
केमन कॅरे मेटाबो जे खुँजे ना पाई दिशा–
ए आँधार जे पूर्ण तोमाय सेइ कॅथा बोलियो।।

हृदय आमार चाय जे दिते, केवल निते नय
बये बये बेडाय से तार जा किछु सचय।

हातखानि ओइ बाडिये आनो दाओ गो आमार हाते–
धॅरबो तारे, भॅरबो तारे राखबो तारे साथे
एकला पथेर चला आमार कॅरबो रमणीय।।

हे प्रिय ! हे बन्धु ! तेरी वाणी

हे प्रिय। हे बन्धु। तेरी वाणी ही नही,
कभी-कभी देना जरा स्पर्श प्राणो को भी।।

सारे पथ की क्लान्ति मेरी, सारे दिन की तृषा,
कैसे मै मिटाऊँ इसे, सूझे ना कोई दिशा,
अँधेरा तुमसे ही पूर्ण होगा, बता यही।।

हदय मेरा देना चाहे केवल न लेना,
लिये-लिये फिरे है जो भी, सचय अपना।

हाथ जरा बढाओ तो, दो मेरे हाथो मे,
थामूँ, हिय लगाऊँ और रखूँ साथ अपने
सुन्दर करूँ मेरा चलना पथ मे अकेले ही।।

केनो चोखेर जले भिजिये दिलेम ना

केनो चाखेर जले भिजिय दिलेम ना शुकनो धुला जॅतो
के जानितो आसबे तुमि गो अनाहूतेर मॅतो।।

पार होये एसेछो मरु,
नाइ जे सेथाय छायातरु,
पथेर दु ख दिलेम तोमाय गो, एमन भाग्यहॅतो।।

आलसेते बसे छिलेम आमि आपन घरेर छाये
जानि नाइ जे तोमाय कॅतो व्यथा बाजबे पाये पाये।

ओइ वेदना आमार बुके,
बेजेछिलो गोपन दुखे
दाग दियेछे मर्मे आमार गो, गभीर हृदय क्षतो।।

क्यो भिजोई न नयन-नीर से

क्यो भिजोई न नयन-नीर से, सूखी धूल मैंने।
कौन जाने, आओगे तुम्ही, अनाहूत बने।।

पार होक आए हो मरू,
नही वहाँ पर छाया तरु,
पथ के दु ख दिये है तुम्हे, मन्द भाग्य मेरे।।

आलस भर, बैठा हुआ था मै, अपने घर, छाँव मे,
जाने कैसी व्यथा हुई होगी, तुम्हे पाँव-पाँव मे।

अन्तर मे है कसक वही
मौन दु ख म रणक रही,
आहत किया मेरे मर्म को, है अति क्षत हृदय।।

आमार हृदय तोमार आपॅन हातेर दोले-

आमार हृदय तोमार आपॅन हातेर दोले दालाओ
के आमारे की जे बॅले भोलाओ॥

ओरा केवल कथार पाके
नित्य आमाय बधे राखे
बाँशिर डाके सकल बाँधन खोलाओ॥

मने पडे कॅतो ना दिन राति
आमि छिलेम तोमार खेलार साथि।

आजके तुमि तेमनि करे
सामने तोमार राखो धरे,
आमार प्राणे खेलार से ढेउ तोलाओ॥

मेरा हृदय तुम अपने हाथो मे

मेरा हृदय तुम अपने हाथो मे दुलाओ,
कोई मुझे कुछ भी कहे, भुलाओ।।

वे तो केवल बातो ही मे
मुझे सदा बाँध रखे,
बन्धन सभी बाँसुरी से खुलाओ।।

याद आए कितने दिन रात
मै भी तेरे खेल मे था साथ।

आज भी तुम, वैसे ही मुझे
सामने फिर रखो अपने,
प्राणो में खल की लहर वही डुलाओ।।

सीमार माझे असीम, तुमि

सीमार माझे असीम, तुमि बाजाओ आपॅन सुर–
आमार मध्ये तोमार प्रकाश ताइ एतो मधुर।।

कॅतो वर्णे कॅतो गन्धे
कॅतो गाने कॅतो छन्दे
अरूप, तोमार रूपेर लीलाय जाग हृदयपुर।
आमार मध्ये तोमार शोभा एमन सुमधुर।।

तोमाय आमाय मिलन होले सकलइ जाय खुले,
विश्वसागर ढेउ खेलाये उठे तॅखन दुले।

तोमार आलोय नाइ तो छाया
आमार माझे पाय से काया,
हॅय से आमार अश्रुजले सुन्दर विधुर।
आमार मध्ये तोमार शोभा एमन सुमधुर।।

सीमा मे है तू असीम

सीमा में है तू असीम, बजाये अपने सुर,
मुझमे तेरा ही प्रकाश, तभी तो ऐसा मधुर।।

कितने रग गन्ध लिये,
कितने गीत छन्द लिये,
अरूप तेरी रूप-लीला मे जागे मेरा उर।
मुझमे है तेरी ही शोभा, ऐसी ही सुमधुर।।

तेरा मेरा मिलन हो जब, सभी भेद खुले
विश्व-सागर ले हिलोरे खेले और डोले।

तेरी दीप्ति मे न छाया,
मुझमे रूप उसीने पाया,
मेरे आँसुओ से बने वो कातर सुन्दर
मुझमे है तेरी ही शोभा, ऐसी ही सुमधुर।।

आजि जॅतो तारा तव आकाशे

आजि जॅतो तारा तव आकाशे
सबे मोर प्राण भरि प्रकाशे।।

निखिल तोमार एसेछे छुटिया,
मोर माझे आजि पडेछे टूटिया हे
तव निकुजेर मजरी जॅतो आमारि अगे विकाशे।।

दिके दिगन्ते जॅतो आनन्द लभियाछे एक गभीर गन्ध
आमार चित्ते मिलि एकत्रे तोमार मन्दिरे उछाशे।

आजि कोनोखाने कारेओ ना जानि,
सुनिते ना पाइ आजि कारो वाणी हे
निखिल निश्वास आजि ए वक्षे बाँशरिर सुरे विलासे।।

आज जो तारे तेरे आकाश मे

आज जो तारे तेरे आकाश मे,
सब प्रकाशते, भर प्राण मेरे।।

निखिल तुम्हारा आया गति मे
आज विखण्डित हुआ है मुझमे, हे।
तेरे निकुज की मजरियाँ सब, विकसे मेरे अग-अग मे।।

दिग्-दिगन्त के सभी आनन्द प्राप्त करे इक गहन सुगन्ध,
मेरे चित्त मे एक साथ मिल हुलसे तेरे मदिर मे।

आज न जानूँ किसी को कही भी,
आज न वाणी सुनूँ किसी की, हे।
निखिल श्वॉस ही उर मे विलसे, आज बासुरी के सुर मे।।

हे मोर देवता

हे मोर देवता, भरिया ए देह प्राण
की अमृत तुमि चाहो करिबारे पान।।

आमार नयने तोमार विश्वछवि
देखिया लॅइते साध जाय तव कवि,
आमार मुग्ध श्रवने नीरव रहि
शुनिया लॅइते चाहो आपनार गान।।

आमार चित्ते तोमार सृष्टि खानि
रचिया तूलिछे विचित्र तव वाणी।

तारि साथे प्रभु मिलिया तोमार प्रीति
जागाय तूलिछे आमार सकल गीति–
आपनारे तूमि देखिछो मधुर रसे
आमार माझारे निजेरे करिया दान।।

हे मेरे भगवन्

हे मेरे भगवन्! भर के प्राण तन
पीना चाहते कैसा अमृत तुम।।

मेरी आँखो मे, विश्व-छवि तुम्हारी
देखना चाहे साध कवि तुम्हारी,
नीरव रहके, मुग्ध कानो मे मेरे
सुनना चाहते अपने गीत तुम।।

मेरे चित्त म सृष्टि जो तुम्हारी
रच रही है तेरी विचित्र वाणी।

उसमे ही प्रभु! मिल के तेरी प्रीत
जगा रही है मेरे सभी गीत,
अपने आपको, मुझमे ढाल के
देखते स्वयम्, मधुर रस मे तुम।।

जीवन जखन शुकाये जाय

जीवन जॅखन शुकाये जाय करुणाधाराय एसो।
सकल माधुरी लुकाये जाय गीतसुधारसे एसो।।

कर्म जॅखन प्रबल-आकार
गरजि उठिया ढाके चारि धार
हृदयप्रान्ते हे जीवननाथ। शान्त चरणे एसो।।

आपनारे जॅबे करिया कृपण कोने पडे थाके दीनहीन मन
दुआर खुलिया हे उदारनाथ। राजसमारोहे एसो।

वासना जॅखन विपुल धुलाय
अन्ध करिया अबोधे भुलाय,
ओहे पवित्र। ओहे अनिद्र। रूद्र आलोके एसो।।

जीवन जब सूख जाय

जीवन जब सूख जाय, करुणाधारा मे आओ।
माधुरी सब, जो छुप जाय, गीत-सुधा बन आओ।।

कर्म प्रबल रूप ले जब,
गरज उठे और ढके सब,
हृदय-तल मे, हे जीवननाथ! शान्त चरणो मे आओ।।

स्वय को जब करे कृपण, कोने मे रहे दीन-हीन मन,
खोल द्वार, हे उदारनाथ! राज-समारोह मे आओ।

विपुल धूल से वासना जब
करे अन्ध, भूले अबोध
ओ हे पवित्र! ओ ह अनिद्र! रुद्र-आलाक म आआ।।

दाँड़ाओ आमार आँखिर आगे

दाँडाओ आमार आँखिर आगे।
तोमार दृष्टि हृदये लाग।।

समुख-आकाशे चराचरलोके
एइ अपरूप आकुल आलोके दाँडाओ हे
आमार परान पलके पलके
चोखे-चोखे तव दरश मागे।।

एइ जे धरणी चेये बॅसे आछे इहार माधुरी बाडाओ हे।
धुलाय बिछानो श्याम अचले दाँडाओ हे नाथ। दाँडाओ हे।।

जाहा-किछु आछे सकलइ झाँपिया,
भुवन छापिया जीवन व्यापिया दाँडाओ हे
दाँडाओ जेखाने विरही ए हिया
तोमारि लागिया एकेला जाग।।

रहो मेरी आँखो के आगे

रहो मेरी आँखो के आगे,
तेरी दृष्टि हृदय मे लागे।।

गगन में, चराचर लोको म
इन अतुल आकुल आलोकों म-रहो हे
मेरा हृदय पलको-पलको मे
दरस तेरा पल-पल मे, मागे।

तेरी ओर धरा निहारे इस करो और मधुर हे।
माटी पे शोभे श्यामल आँचल, इस पे रहो नाथ रहो हे।

तज सभी कर भुवन प्लावन
चिर जीवन मे व्याप्त हो कर-रहो हे,
रहो जहाँ यह हृदय विरही
तेरे लिये एकल ही जागे।।

यदि ए आमार हृदय दुआर

यदि ए आमार हृदयदुआर बन्ध रहे गो कभु
द्वार भेंगे तुमि एसो मोर प्राणे फिरिया जेयो ना प्रभु।।

यदि कोनो दिन ए वीणार तारे
तव प्रियनाम नाहि झंकारे
दया करे तबू रहियो दाँडाये, फिरिया जेयो ना प्रभु।।

यदि कोनो दिन तोमार आह्वान
सुप्ति आमार चेतना ना माने
वज्र वेदने जागायो आमारे, फिरिया जेयो ना प्रभु।।

यदि कोनो दिन तोमार आसने
आर काहारेओ बसाई जतने
चिरदिवसेर हे राजा आमार फिरिया जया ना प्रभु।।

मेरे हृदय के द्वार

मेर हृदय क द्वार रह जा बन्द कभी, हे प्रभु।
उन्हे खोलकर तुम मन मे समाना जाना कभी ना प्रभु।।

यदि वीणा के इन तारो मे किसी दिन,
झकारे न जो प्रिय नाम तेरे
फिर भी दया कर रहना वही पर, जाना कभी ना प्रभु।।

आह्वान तेरा, सुनकर किसी दिन
निद्रा न टूटे, रहूँ मै अचेतन
आघात देकर, मुझको जगाना जाना कभी ना प्रभु।।

बैठाऊँ यदि मै जतनो से किसी दिन
और किसी को तेरे सिंहासन
फिर भी हे राजा जनम-जनम के, जाना कभी ना प्रभु।।

चरण धॅरिते दियो गो आमारे

चरण धॅरिते दियो गो आमारे, नियो ना, नियो ना सॅराये
जीवन मरण सुख दुख दिये वक्षे धॅरिबा जॅडाये।।

स्खलित शिथिल कामनार भार
वहिया वहिया फिरि कॅतो आर–
निज हाते तुमि गेथे नियो हार फेलो ना आमारे छॅडाये।।

चिरपिपासित वासना वेदना बाँचाओ ताहारे मारिया,
शेष जॅये जेनो हॅय से विजयी तोमारि काछेते हारिया।

बिकाये बिकाये दीन आपनारे
पारि ना फिरिते दुआरे दुआरे
तोमारि करिया नियो गो आमारे वरणेर माला पॅराये।।

चरण-स्पर्श

चरण-स्पर्श कर पाऊँ मै भी, करो न, करो न दूर मुझसे,
जीवन-मरण मे सुख और दुख मे रखूँ मै लगाये हृदय से।।

पतित, शिथिल है मेरी कामनाए,
कितना फिरूँ और इनको उठाये
हाथो से अपने पिरो हार इनके मुझे न बिखेरो ऐसे।।

प्यासी सदा वासना, वेदनाये, रक्षा करो, मारो इनको,
अन्तिम जयी हो इस द्वन्द्व मे वह हारे जो तुमसे स्वय को।

अपने को यह दीन वारे-वारे,
और फिरे न द्वारे-द्वारे
अपना बना ले मुझको तुम्हारे अपने ही माला-वरण से।।

अन्तर मम विकशित करो

अन्तर मम विकशित करो अन्तर तर हे,
निर्मल करो उज्ज्वल करो, सुन्दर करो हे।।

जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे।
मगल करो निरलस नि सशय करो हे।।

युक्त कॅरो हे सॅबार सङ्गे मुक्त करो हे बन्ध।
सचार कॅरो सकल कर्मे शान्त तोमार छन्द।

चरण पद्मे मम चित निस्पदित करो हे।
नन्दित करो नन्दित करो, नन्दित करो हे।।

विकसित कर मेरा अन्तर

विकसित कर मेरा अन्तर अन्तर-तर ह
निर्मल कर उज्ज्वल कर सुन्दर कर हे।।

जाग्रत कर उद्यत कर, निर्भय कर हे।
निरलस नि सशय कर मगल कर हे।।

सबके सग युक्त करो मुक्त करो बन्धन,
अपना शान्त छन्द करो कर्मो मे सचारण।।

मेरा चित्त नि स्पदित कर चरणो मे,
आनन्दित नन्दित, आनन्दित कर हे।।

धने जने आछि जॅंड़ाये

धने जने आछि जॅंडाये हाय
तबू जाना मन तोमारे चाय।।

अन्तरे आछो अन्तर्यामी
आमा चेय आमाय जानिछो स्वामी–
सब सुखे दुखे भूले थाकाय
जानो मम मन तोमारे चाय।।

छाडिते पारिनि अहकारे,
घूरे मॅरि शिरे वहिया तारे
छाडिते पारिले बॉंचि जे हाय–
तूमि जानो मन तोमारे चाय।।

जा आछे आमार सफलई कॅबे,
निज हाते तूमि तूलिया लॅबे–
सब छेडे सब पाबो तोमाय
मने मने मन तोमारे चाय।।

अब भी धन जन मे डूबा मन

अब भी धन जन, मे डूबा मन
फिर भी तुम, मेरे जीवन धन।।

अन्तर मे स्थित अन्तर्यामी,
तुम्ही मुझे पहचानो स्वामी,
सब सुख दु ख मे, भूल भ्रान्ति मे
जानो तुम्ही, तुम्हे चाहे मन।।

अहकार को तज न सका मै,
वही भार ढोता रहता मै,
उसे छोडने मे ही जीवन,
तुम जानो, तुमको चाहे मन।।

जाने कब, जो कुछ भी मेरा,
स्वय तुम्ही कर लोगे अपना,
सबको तज सब पाऊँ तुम मे,
मन चाहे, तुमको मन ही मन।।

तुमि एबार आमाय

तुमि एबार आमाय लहो हे नाथ! लहो,
एबार तुमि फिरो ना हे हृदय केडे निये रहो।।

जे दिन गेछे तोमा बिना
तारे आर फिरे चाहि ना–जाक् से धूला ते
एखॅन तोमार आलोय जीवन मेले
जेनो जागि अहरह।।

की आवेशे कोसेर कथाय
फिरेछि हे यथाय तथाय पथे प्रान्तरे,
एवार बुकेर काछे ओ मुख रेखे–
तोमार आपन वाणी कहो।।

कॅता कलुष कॅता फाँकि
एखनो जे आछे बाकि मनेर गोपने
आमाय तार लागि आर फिरायो ना–
तारे आगुन दिये दहो।।

अपना लो मुझे

अपना लो मुझे हे नाथ! अपना लो।
हे नाथ! चले जाना न अबके, हरो हृदय घर बना लो।।

तेरे बिन बीते जो दिन
उन्हे अब चाहूँ न फिर-मिले वो धूल मे
तेरी ज्योति मे अब जीवन मिले,
जागूँ रात दिन उसी मे।।

करता हूँ बातें वृथा,
फिरता हूँ यहाँ-वहाँ — राहो, कूचा म
अब श्रीमुख से तुम अपनी वाणी
मेरे हृदय को सुना दो।।

कितने कलुष, अलस
अभी भी बचे हुए मन के कोने मे
मुझे फेरना न उनके लिए,
उन्हे अनल से जला दो।।

यदि तोमार देखा ना पाइ प्रभु

यदि तोमार देखा ना पाइ प्रभु एबार ए जीवने
तबे तोमाय आमि पाइ नि जेनो से कॅथा रॅय मनै।
जेनो भुले ना जाइ वेदना पाइ शयने स्वपने।।

ए संसारेर हाटे आमार जॅताइ दिवस काटे
आमार जॅतोइ दु हात भरे उठे धने
तबु किछुइ आमि पाइ नि जेनो से कथा रॅय मने।
जेनो भुले ना जाइ वेदना पाइ शयने स्वपने।।

यदि आलसभरे आमि बसि पथेर'परे
यदि धुलाय शयन पाति सयतने
जेनो सकल पॅथइ बाकि आछे से कथा रॅय मने।
जेनो भुले ना जाइ वेदना पाइ शयने स्वपने।।

जॅताइ उठे हासि घरे जॅतोइ बाजे बाँशि
ओगो जॅतोइ गृह साजाइ आयोजने
जेनो तोमाय घरे हॅय नि आना से कथा रॅय मने।
जेनो भुले ना जाइ वेदना पाइ शयने स्वपने।।

यदि दरस तेरा पाऊँ न प्रभु

यदि दरस तेरा पाऊँ न प्रभु मेरे इसी जीवन मे
तब तुम्हे मैंने पाया नही यही रहे मन म,
भूलूँ न इस कसक रहे शयन मे सपन मे।।

जगत की मण्डी मे चाहे जितन दिन बीत
चाहे दानो हाथ भर धन से मेर
पर कुछ न पाया मैंने ता यही रहे मन मे
भूलूँ न इसे, कसक रहे शयन मे, सपने मे।।

यदि आलस भरे मैं बैठूँ पथ किनार
यदि सोया रहूँ धूल प जतन से
पर राहे सभी शष अभी यही रहे मन मे,
भूलूँ न इसे, कसक रहे शयन मे सपने मे।

हँसी कितनी ही आये बसी भी बजती जाये
घर कितना ही सजाऊँ आयाजन मे
पर विराजे न तुम तो वहाँ यही रहे मन में
भूलूँ न इसे कसक रहे शयन मे सपने मे।।

तोमार सुर शुनाये

तोमार सुर शुनाये जे घुम भागाओ, से घुम आमार रमणीय
जागरणर संङिगनी से, तारे तामार परश दिया।।

अन्तरे तार गभीर क्षुधा
गोपने चाय आलाकसुधा,
आमार रातेर बुके से जे तोमार प्रातेर आपन प्रिय।।

तारि लागि आकाश राङा आँधार-भाङा अरुणरागे
तारि लागि पाखिर गाने नवीन आशार आलाप जागे।

नीरव तोमार चरणध्वनि
शुनाय तारे आगमनी
सन्ध्यावेलार कुँडि तारे सकालवेलाय तुले नियो।।

तेरे सुर सुनाके

तेरे सुर सुनाके नीद जो तू जगाये, वो नीद मुझे नीकी लगे,
जागरण की वो सगिनी, स्पर्श दे अपना उसे।।

उसके हिये व्याकुल क्षुधा,
चाहे अकेले मे आलोक सुधा,
मेरी रातो के हृदय मे वो तेरे प्रभात की है प्रिये।।

आकाश उसी के लिये रगीन अरुण अधकार-हीन,
गाये विहग उसी के लिये, आशा के स्वर जागे नवीन।

चरण-चाप मौन तेरी,
उसे लगे आगमन-ध्वनि,
साझ की वो कली उसे तुम्हीं चुनो सवेरे।।

क्लान्ति आमार क्षमा करो प्रभु

क्लान्ति आमार क्षमा करो प्रभु।
पथे यदि पीछिय पडि कभु।।

एई जे हिया थँरो थँरो
काँपे आजि एमन तँरो
एई वेदना क्षमा करो, क्षमा करो क्षमा करो प्रभु।।

एई दीनता क्षमा करो प्रभु
पिछॅन पाने ताकाइ यदि कभु।

दिनेर तापे रौद्र ज्वालाय
शुकाय माला पूजार थालाय
सेई म्लानता क्षमा करो क्षमा करो क्षमा करो प्रभु।।

क्लान्ति मेरी क्षमा करो प्रभु

क्लान्ति मेरी क्षमा करो प्रभु।
पथ मे जा पीछे कभी रहूँ।।

हृदय मेरा थर-थर
काँपे आज रह-रह,
वेदना ये क्षमा करो, क्षमा करो, क्षमा करो प्रभु।।

मेरी दीनता क्षमा करो प्रभु।
मुडक कभी पीछे जो देखूँ।

दिन की तप्त रौद्र ज्वाला,
पूजा की भी सूखे माला,
मलिनता ये, क्षमा करो, क्षमा करो, क्षमा करो प्रभु।।

तुमि डाक दियेछो कोन् सकाले

तूमि डाक दियेछो कोन् सकाले केउ ता जाने ना
आमार मन जे काँदि आपन मन कउता मान ना।।

फिरि आमि उदास प्राणे
ताकाई सबार मुखेर पाने,
तोमार मोतो एमॅन टाने केउ तो टाने ना।।

बज उठे पचम स्वर
कॅंपे ओठे बन्ध ए घर
बाहिर हॅंइते दुआरे कर केउ तो ह्यने ना।

आकाशे कार व्याकुलता
बातास बहे कार वारता
ए पॅथे सेई गोपन कॅथा केउ तो आने ना।।

तूने जगाया किस सुबह मुझे

तूने जगाया किस सुबह मुझे जाने न कोई।
मेरा मन रोये, मन ही मन मे, माने न कोई।।

अनमना सा घूमा करूँ,
सभी को मै देखा करूँ
ज्यो तू मुझे मोहे त्यो मोहे न कोई।।

बज उठे पञ्चम मे स्वर,
काँप उठे बन्द यह घर
मेरे द्वारे पुकारे न, बाहर से कोई।

अम्बर मे किसकी व्याकुलता,
हवाओ मे किसकी कथा
बाते ये गोपन यहाँ, कहे न कोई।।

आमार व्यथा जॅखन

आमार व्यथा जॅखन आने आमाय तोमार द्वारे
तॅखन आपनि एसे द्वार खुले दाओ, डाको तारे।।

बाहुपाशेर कागाल से जे,
चलछे ताइ सकल त्येजे
कॉटार पथे धाये से तोमार अभिसारे।।

आमार व्यथा जॅखन बाजाय आमाय बाजि सुरे–
सेई गानेर टाने पारो ना आर रॅइते दूरे।

लुटिये पडे से गान मम
झडेर रातेर पाखि सम
बाहिर होये एशो तुमि अन्धकारे।।

मेरी व्यथा तेरे द्वारे

मेरी व्यथा तेर द्वारे मुझ जब ले आये,
तब तू ही उसे द्वार खोल और गले लगाये।।

बाहुपाश की व्याकुलता मे
दीन, वा सब छाड चले,
काँटो की राह पर तर अभिसार मे धाये।।

मेरी व्यथा मुझे जब बजाए, बजूँ सुर मे,
वह गीत सुने, रह न पाये दूर तू मुझसे।

मेरा वो गीत आकुल ऐसे
पछी आँधी की राता मे जैसे,
अँधेरे मे सामने तब तू ही तो आये।।

आवार एरा घिरेछे मोर मन

आवार एरा घिरेछे मोर मन
आवार चोखे नामे आवरण

आवार ए जे नाना कथाई जमे
चित्त आमार नाना दिके भ्रमे
दाह आवार बेडे उठे क्रमे
आवार एजे हाराई श्री चरण।।

तव नीरव वाणी हृदय तले,
डोबे ना जेनो लोकेर कोलाहले।

सवार माझ आमार साथे थाको
आमाय सदा तामार माझ ढाका
नियत मोर चेतना 'परे राखो
आलोके भरा उदार त्रिभुवन।।

इन्होने फिर घेरा मेरा मन

इन्होने फिर घेरा मेरा मन
नैनो मे फिर छाया आवरण।

बहुत, फिर कथाएँ घर करे,
चित्त मेरा दसो दिशा भ्रमे,
बढती रहे और फिर जलन
भूलूँ मै फिर, तेरे श्री चरण।।

तेरी नीरव वाणी, हृदय तल मे
डूब न जाये जन-कोलाहल मे।

सभी मे तुम मेरे सग रहो
मुझमे सदा तुम ही तुम रहो,
नित्य मेरी चेतना मे रखो,
तेजोमय उदार त्रिभुवन।।

बसे आछिहे

वस आछि हे कबे शुनिबो तोमार वाणी।
कॅबे बाहिर हॅई बो जगते मम जीवन धन्य मानि।।

कबे प्राण जागिबे तव प्रेम गाहिबे,
द्वारे द्वारे फिरि सबार हृदय चाहिबे
नरनारीमन करिया हरण चरणे दिबे आनि।।

केहो शुने ना गान जागे ना प्राण
विफले गीत अवसान–
तोमार वचन करिबो रचन साध्य नाहि नाहि।

तुमि ना कॅहिले केमने कॅबो प्रबल अजेय वाणी तव
तूमि जा बलिबे ताइ बलिबो, आमि किछुई ना जानि
तव नामे आमि सवारे डाकिबो, हृदये लइबो टानि।।

घडी होगी कौन सी

घडी होगी कौन सी जब तेरी वाणी सुनूँगा
जीवन को धन्य मान के, कब जगत मे निकलूँगा।।

कब प्राण जागेंगे तेरा प्रेम गायेगा,
द्वारे द्वारे जाके सबके ह्रदय माँगेगा,
सभी के मन करके हरण, चरणा पे रख देगा।।

कोई सुने न गीत, जागे न प्राण,
विफल गीत का अवसान,
नही क्षमता करूँ रचना, मै भी तेरी वाणी।

तेरे अजेय प्रबल वचन तू न कहे तो कैसे कहूँ,
मै न कुछ भी जानूँ, जो तू कहे वो सबसे कहूँ,
तेरे नाम पे पुकार सबको, अपना बना लूँगा।।

आमार सकल दुखेर प्रदीप

आमार सकल दुखर प्रदीप ज्वले दिवस गले कॅरबा निवेदन-
आमार व्यथार पूजा हॅय नि समापन।।

जॅखन वेला शेषेर छायाय पाखिरा जाय आपन कुलाय माझे
सन्ध्यापूजार घण्टा जॅखन बाज
तॅखन आपन शेष शिखाटि ज्वालबे ए जीवन–
आमार व्यथार पूजा हॅबे समापन।।

अनेक दिनेर अनेक कथा, व्याकुलता, बाँधा वेदन डोरे
मनेर माझ उठछे आज भ'रे।

जॅखन पूजार होमानले उठबे ज्वले एके एके तारा
आकाश-पाने छुटबे बाँधन हारा
अस्त रविर छविर साथे मिलबे आयोजन–
आमार व्यथार पूजा होबे समापन।।

मेरी व्यथाओ के दीप जलाके

मेरी व्यथाओ के दीप जलाके दिन ढलने पर करूँगा निवेदन
मेरे दु ख की पूजा हुई न पूरण।।

ढलती वेला की छाया मे पछी अपने नीड मे जब जाएँ,
साध्य पूजा की जब झाझर बाजे
तभी स्वय का अन्तिम बाती जलाए यह जीवन
मेरे दु ख की पूजा होगी पूरण।।

कितने दिन कितनी कथा और व्याकुलता बँधी वदनाआ स
रह रह आज सभी उठ मेरे मन म।

जब पूजा के यज्ञ-अनल म जल जाएँगी, एक एक कर व
अम्बर मे वे रमेगी बन्धन खाले
अस्त रवि की छवि जैसा वह होगा आयाजन
मेरे दु ख की पूजा होगी पूरण।।

आजि विजन घरे निशीथराते

आजि विजन घरे निशीथराते आसबे यदि शून्य हाते
आमि ताइते कि भय मानि। जानि जानि, बन्धु जानि–
तोमार आछे तो हातखानि।।

चावा-पावार पथे पथे
दिन केटेछे, कोनो मते
एखन समय होलो तोमार काछे आपनाके दिइ आनि।।

आँधार थाकुक दिके दिके आकाश-अन्ध-करा
तोमार परश थाकुक आमार-हृदय-भरा।

जीवनदोलाय दुले दुले
आपनारे छिलेम भुले,
एखन जीवन मरण दु दिक दिये नेब आमाय टानि।।

आज विजन घर मे

आज विजन-घर मे रीते हाथ ले, आधी रात भी आओगे यदि
मै इसम क्यो भय मानूँ, जानूँ, जानूँ बन्धु जानूँ,
ये है तेरे हाथ, जानूँ।।

दिन कट है किसी तरह
चाहने पाने की राहो मे
अब समय हुआ स्वयम् को मै तुम्ह सौप डालूँ।।

रहे अधेरा दिशाओ मे, गगन तिमिर-भरा
रहे स्पर्श तेरा भरे हृदय मेरा।

जीवन-झूला झूल-झूल
अपने आपको, मै गया भूल,
अब तुम्ही मुझे अपनाओगे जीवन-मरण दोनो से।।

आगुनेर परशमणि छोंआओ प्राणे

आगुनेर परशमणि छोंआओ प्राणे,
ए जीवन पुण्य करो दहन-दाने।।

आमार एइ देहखानि तुले धॅरो,
तोमार ओइ देवालयेर प्रदीप कॅरो–
निशिदिन आलोक शिखा ज्वलुक गाने।।

आँधारेर गाये गाये परश तव
सारा रात फोटाक तारा नव नव।

नयनेर दृष्टि होते घुचबे कालो,
जेखाने पॅडबे सेथाय देखबे आलो–
व्यथा मोर उठबे ज्वले ऊर्ध्व-पान।।

अग्नि की स्पर्शमणि

अग्नि की स्पर्श-मणि छुवाओ प्राण से
यह जीवन धन्य करो दहन-दान से।

मेरी इस देह को अब सम्भालो
तेरे मन्दिर का दीप इस बना लो
निशिदिन ज्योति-शिखा जले गान से।।

अधेरे के अग-अग स्पर्श तुम्हारा,
रात भर उगाए नव-नव तारा।

नयनो की दृष्टि से मिटेगा अँधेरा
जहाँ जायेगी वहाँ दिखेगा सवेरा
जलगी ऊर्ध्वमुखी मेरी व्यथाये।।

जे राते मोर दुआरगुलि

जे राते मोर दुआरगुलि भागलो झडे
जानि नाइ तो तुमि एले आमार घरे।।

सब जे होये गेलो कालो,
निबे गेलो दीपेर आलो,
आकाश-पाने हात बाडालेम काहार तरे ?

अन्धकारे रँइनु पडे स्वपन मानि।
झड जे तोमार जयध्वजा ताइ कि जानि ?

सकाल वेलाय चेये देखि
दाँडिये आछो तुमि ए कि ?
घर-भरा मोर शून्यताइ बुकेर परे।।

वो रात जब द्वार मेरे टूटे

वो रात, जब द्वार मेरे टूटे आँधी मे।
जाना न था तुम्ही आये मेरे घर मे।।

सब ओर अँधेरा छा गया
बुझ गई दीप-शिखा,
हाथ बढाये किसके लिये, मैने आकाश मे।।

अँधेरे मे, मै जो रहा, मान के सपना,
आँधी तुम्हारी जयध्वजा नही ये जाना।

सवेरे जो देखा ध्यान से,
ये क्या ? तुम्ही खडे सामने
उसी शून्य पर जो मेरे घर को था भरे।।

एइ कॅरेछो भालो

एइ कॅरेछो भालो निठुर हे एइ कॅरेछो भालो।
एमनि कॅरे हृदये मोर तीव्र दहन ज्वालो।

आमार ए धूप ना पोड़ाले
गन्ध किछुइ नाहि ढाले,
आमार ए दीप ना ज्वालाले देय ना किछुइ आलो।।

जॅखन थाके अचेतन ए चित्त आमार।
आघात से जे परश तव सेइ तो पुरस्कार।

अन्धकार मोह लाजे
चोखे तोमाय देखि ना जे,
वज्रे तोलो आगुन कॅरे आमार जॅतो कालो।।

यही तो शुभ किया

यही तो शुभ किया, निठुर हे! यही तो शुभ किया।
ऐसे तीव्र दहन से ही जला मेरा हिया।

धूप सा मुझे न सुलगाये,
कोई सुगन्ध न बिखराये,
दीप सा मुझे नही जलाये, न हो कोई उजाला।

जब कभी रहे अचेत चित्त यह मेरा
आघात वही स्पर्श तेरा, पुरस्कार-भरा।

मोह लाज तमस भरे
नयन न तेरा दरस करे,
वज्र की अनल से मेरे सभी कलुष जला।

विपदे मोरे रक्षा करो

विपदे मोरे रक्षा करो ए नहे मोर प्रार्थना–
विपदे आमि ना जेनो करि भय।
दुखतापे व्यथित चित्ते नाइ वा दिले सात्वना
दु खे जेनो करिते पारि जय।।

सहाय मोर ना यदि जुटे निजेर बल ना जना टुटे–
ससारेते घटिले क्षति लभिले शुधु वचना
निजेर मने ना जेनो मानि क्षय।।

आमारे तुमि करिबे त्राण ए नहे मोर प्रार्थना–
तरिते पारि शकति जेनो रँय।
आमार भार लाघव करि नाइ वा दिले सात्वना,
बहिते पारि एमनि जेनो हँय।।

नम्र सिरे सुखेर दिने तोमारि मुख लँइबो चिने–
दुखेर राते निखिल धरा जे दिन करे वचना
तोमारे जेनो ना करि सशय।।

तुम विपद् से उबारो

तुम विपद् से उबारो यह प्रार्थना नही है।
मै विपद् मे न मानूँ, कोई भी भय कही है।।

दु ख-ताप से व्यथित मन, तुम भले न सहलाना
दु ख-जयी बन सकूँ मै बस कामना यही है।।

कोई न हो सहायक, निज बल न पार पाए,
क्षति वचना से मेरा अन्तर न टूट जाए।।

हे नाथ! तुम बचालो, यह प्रार्थना न मेरी,
'तर जाऊँ अपने ही से पर शक्ति हो वो तेरी।।

मुझे भार-मुक्त करके, तुम सात्वना न देना
मै ही उसे उठा लूँ, मेरी विनय यही है।।

सुख मे तो मै सहज ही पहचान लूँगा तुमको
सशय न घेरे दु ख की रातो मे तू नही है।।

आछे दुःख, आछे मृत्यु

आछे दु ख आछे मृत्यु विरहदहन लागे।
तबुओ शान्ति तबु आनन्द तबु अनन्त जागे।।

तबु प्राण नित्यधारा
हासे सूर्य चन्द्र तारा,
वसन्त निकुजे आसे विचित्र रागे।।

तरग मिलाये जाय तरग उठे
कुसुम झरिया पॅडे कुसुम फुटे।

नाहि क्षय नाहि शेष
नाहि नाहि दैन्यलेश–
सेइ पूर्णतार पाये मन स्थान मागे।।

दु:ख भी है, मृत्यु भी है

दु ख भी है, मृत्यु भी है, विरह भी जलाये,
तब भी है आनन्द, शान्ति अनन्त जगता रहे।।

फिर भी प्राण नित्य-धारा,
हँसे सूर्य, चन्द्र, तारा,
कुञ्ज मे विचित्र सुरो मे बसन्त आये।।

तरगे मिटे और तरगे उठे,
फूल भी झरें और फूल खिले।

क्षय नही है, न कोई शेष
नही दैन्य का लवलेश,
उसी पूर्ण के चरण मे चित्त शरण चाहे।।

चोखेर आलोय देखे छिलेम

चोखेर आलोय देखे छिलेम चोखेर बाहिरे
अन्तरे आज देखबो जॅखन आलोक नाहिरे।।

धराय जॅखन दाओ ना धरा
हृदय तॅखन तोमाय भरा
एखन तोमार आपन आलोय तोमाय चाहिरे।।

तोमाय निये खेले छिलम खलार घर ते
खेलार पुतुल भेगे गेछे प्रलय झडेते।

थाक तॅबे सेई केवल खेला,
होक ना एखन प्राणेर मेला–
तारेर वीणा भागलो, हृदय-वीणाय गाहि रे।।

आँखो से तो देखा केवल

आँखो से तो देखा केवल आँखो के बाहर ही
अन्दर आज देखूँगा, जब आलोक हो नही।।

जब धरा पर नही मिले,
तब तुम्ही से हृदय भरे,
अब तेरी अपनी ज्योति मे, चाहूँ तुम्हे ही।।

तेरे साथ खेला था मै, खेल के घर मे,
टूट गये सब खेल खिलौने प्रलय-पवन मे।

खेल केवल रहने भी दो
मेल प्राणो का होने भी दो
तारो की वीणा टूट गई मन वीणा गा रही।।

ताइ तोमार आनन्द आमार 'पर

ताइ तोमार आनन्द आमार 'पर, तुमि ताइ एसेछो नीचे,
आमाय नँइले त्रिभुवनेश्वर तोमार प्रेम होतो जे मिछे।।

आमाय निये मेलेछो एइ मेला
आमार हियाय चलछे रसेर खेला
मोर जीवने विचित्ररूप धरे तोमार इच्छा तरंगिछे।।

ताइ तो तुमि राजार राजा होये तबु आमार हृदय लागि
फिरछो कँतो मनोहरण वेशे प्रभु नित्य आछो जागि।

ताइ तो प्रभु जथाय एलो नेमे
तोमारि प्रेम भक्तप्राणेर प्रेमे
मूर्त्ति तोमार युगलसम्मिलने सेथाय पूर्ण प्रकाशिछे।।

तेरा आनन्द मुझमे समाये

तेरा आनन्द मुझमे समाये तभी तुम धरा पे आये।
त्रिभुवन नाथ। मेरे बिना प्रेम तेरा, मिथ्या जो हो जाये।।

रचाया है मुझी से यह मेला
हृदय मे चले रस की लीला,
इच्छा तेरी विचित्र रूपो मे मेरे जीवन मे लहराये।।

यो तो तुम हो राजाओ के राजा, फिर भी मेरे हृदय के हित
घूमते हो, मनोहारी कितने बने रहते सदा जागृत।

तभी तो प्रभु जहाँ भी प्रेम तेरा
भक्त के हृदय के प्रेम मे मिला
मूर्त्ति तेरी इस मिलन से पूर्ण वहाँ, प्रकाशे सुहाये।।

जानि जानि कोन् आदिकाल होते

जानि जानि कोन् आदि काल होते
भासाले आमारे जीवनेर स्रोते–
सहसा हे प्रिय, कॅतो गृहे पथे
रेखे गेछो प्राणे कॅतो हरषन।।

कॅतो बार तुमि मेघेर आडाले
एमनि मधुर हासिया दाँडाले,
अरुण किरणे चरण बाडाले,
ललाटे राखिले शुभ परशन।।

सचित हॅये आछे एइ चोखे
कॅतो काले काले कॅतो लोके लोके
कॅतो नव नव आलोके आलोके
अरूपेर कॅतो रूप दरशन।

कॅतो युगे युगे केहो नाहि जाने
भरिया भरिया उठेछे पराने
कॅतो सुखे दुखे कॅतो प्रेम गाने
अमृतेर कॅतो रस बरषन।।

जानूँ कौन से आदिकाल से

जानूँ कौन स आदिकाल से
मुझे जीवन-स्रोत मे बहा दिया
सहसा कितने गृहो मे, राहो मे,
कितना हर्षित प्राणो को किया।।

जाने कितनी बार मुस्काते मधुर,
बादल की ओट म तुम प्रकटे,
अरुणिम किरणो मे बढाये चरण
और ललाट पर शुभ परस दिया।।

जाने कितने काल और लोका मे
कितने नव-नव आलोको मे,
कितना रूप--दरस उस अरूप का
सचित है मेरे इन नैनो मे।

जाने नहीं काई कितने युगो मे,
सुख दु ख, प्रेम, गीत कितनो मे,
कितने अमृत-रस-वर्षण से
तुम भरते रहे प्राणो मे सुधा।।

ध्वनिलो आह्वान

ध्वनिलो आह्वान मधुर गम्भीर प्रभात-अम्बर-माझे
दिके दिगन्तरे भुवन मन्दिरे शान्तिसगीत बाजे।।

हेरो गो अन्तरे अरुपसुन्दरे निखिल ससार परमबन्धुर,
एसो आनन्दित मिलन-अगने शोभन मगल साजे।।

कलुष कल्मष विरोध विद्वेष होउक निर्मल होउक नि शेष
चित्ते हाक जँतो विघ्न अपगत नित्य कल्याणकाज।

स्वर तरगिया गाओ विहगम, पूवपश्चिम बन्धु-सगम
मैत्री बन्धन पुण्य-मन्त्र पवित्र विश्वसमाजे।।

ध्वनित आह्वान

ध्वनित आह्वान गहन सुमधुर, नित प्रभात-आकाश मे।
दिग्-दिगन्तर, भुवन-मन्दिर, शान्ति-स्वर गुञ्जारे।।

निरखो उर मे अरूप सुन्दर, निखिल जग मे परम बान्धव।
आओ मुद-मन मिलन-आँगन, रुचिर मगल साज मे।।

कलुष, द्वेष विरोध कल्मष, शेष होवे, हो वे निर्मल,
चित्त के हो विघ्न अपगत, नित्य मगल-काज मे।

गाओ ये स्वर, हे विहगम! पूर्व-पश्चिम-बन्धु-सगम
मैत्री-बन्धन पुण्य-मत्र पवित्र विश्वसमाज मे।।

आनन्दधारा बहिछे भुवने

आनन्दधारा बहिछे भुवने
दिनरजनी कॅतो, अमृतरस उथलि जाय अनन्त गगने।।

पान करे रवि शशि अजलि भरिया,
सदा दीप्त रहे अक्षय ज्योति,
नित्य पूर्ण धरा जीवने किरणे।।

बसिया आछो केनो आपन-मने,
स्वार्थ–निमगन की कारणे ?

चारि दिके देखो चाहि हृदय प्रसारि
क्षुद्र दु ख सब तुच्छ मानि,
प्रेम भरिया लॅहो शून्य जीवने।।

आनन्दधारा बहे भुवन मे

आनन्दधारा बहे भुवन मे,
रात-दिन कितना अमृत-रस उमडे अनन्त व्योम मे।।

रवि, शशि, पीवे अजलि भर-भर,
अक्षय ज्योति रहे दीप्त निरन्तर,
जीवन-किरण नित धरा को पूरे।।

अपने आप मे क्यो बैठे हो
स्वार्थ मगन किस कारण से हो ?

देखो चतुर्दिक हृदय खोलकर,
क्षुद्र दु ख सब, तुच्छ मानकर,
भर लो प्रेम सूने जीवन मे।।

भेंगेछो दुआर, एसेछो ज्योतिर्मय

भेगेछो दुआर, एसेछो ज्यातिर्मय, तोमारि होक जय।
तिमिरविदार उदार अभ्युदय, तोमारि होक जय।।

हे विजयी वीर, नव जीवनेर प्राते
नवीन आशार खड्ग तोमार हाते-
जीर्ण आवेश काटो सुकठोर घाते, बन्धन होक क्षय।।

एसो दु सह, एसो एसो निर्दय तोमारि होक जय।
एसो निर्मल, एसो एसो निर्भय, तोमारि हाक जय।

प्रभातसूर्य, एसेछो रुद्रसाजे
दु खेर पथे तोमार तूर्य बाजे--
अरुण वह्नि ज्वालाओ चित्तमाझे, मृत्युर होक लय।।

द्वार खोले, आये हे ज्योतिर्मय !

द्वार खोले, आये हे ज्योतिर्मय! जय हो तेरी जय।
तिमिर-हारी, ऊषा के अभ्युदय, जय हो तेरी जय।।

हे विजयी वीर! नये जीवन के सवेरे
नई आशा के खड्ग कर मे तेरे
करो विदीर्ण, जीर्ण आवेश मेरे, बन्धन हो क्षय।।

आओ दु सह, आओ आओ निर्दय, जय हो तेरी जय।
आओ निर्मल, आओ, आओ निर्भय, जय हो तेरी जय।।

प्रभाती-सूर्य, रुद्र बनके आये,
तेरे ही तूर्य, दु ख-पथ मे बाजे,
अरुण-अग्नि जलाओ चित् मे मेरे मृत्यु भी हो लय।।

ससार जॅबे मन केड़े लय

ससार जॅबे मन केडे लॅय, जागे ना जॅखन प्राण,
तॅखनो, हे नाथ प्रणमि तोमाय गाहि बसे तव गान।।

अन्तर्यामी, क्षमो से आमार शून्य मनेर वृथा उपहार–
पुष्पविहीन पूजा-आयोजन भक्तिविहीन तान।।

डाकि तव नाम शुष्क कण्ठे, आशा करि प्राण पणे–
निविड प्रेमेर सरस वरषा यदि नेमे आसे मने।

सहसा एकदा आपना हइते भरि दिबे तुमि तोमार अमृते
एई भरसाय करि पदतले शून्य हृदय-दान।।

ससार हरे जब मेरा मन

ससार हरे जब मेरा मन, जागे नही यह प्राण,
तब भी हे नाथ। प्रणाम तुम्हे, गाऊँ तेरा यशगान।।

अन्तर्यामी। क्षमा करो, ये शून्य मन के वृथा उपहार--
पुष्पविहीन पूजा-आयोजन, भक्तिविहीन तान।।

रटूँ तेरा नाम सूखे कण्ठ, आशा करूँ प्राण-पण से,
निविड प्रेम की सरस वर्षा कभी तो मन मे बरसे।

सहसा एक दिन अपने ही से भर देगा तू निज सुधा से
चरणो मे करूँ, इसी भरोसे रिक्त हृदय दान।।

ए मणिहार आमाय नाहि साजे

ए मणिहार आमाय नाहि साजे–
एरे पोरते गेले लागे, एरे छिंडते गेले बाजे।।

कण्ठ जे रोध करे, सुर तो नाहि सरे–
ओइ दिके जे मन पडे रँय, मन लागे ना काजे।।

ताइ तो बसे आछि
ए हार तोमाय पराई यदि तँबेइ आमि बाँचि।

फूलमालार डोरे वरिया लँओ मारे–
तोमार काछे देखाइ ने मुख मणिमालार लाजे।।

मणिमाला यह मुझे नही साजे

मणिमाला यह मुझे नही साजे
इसे पहन लूँ तो लागे, इसे तोड दूँ तो बाजे।।

कण्ठ रुद्ध करे, सुर तो नही सरे,
उधर ही मन लगा रहे और कही न लागे।।

इसी से बैठा हूँ,
यदि यह माला तुम्हे चढाऊँ तब ही बच पाऊँ।

फूलो की माला के डोरे से वर मुझे,
तुम्हे न मुख मै दिखाऊँ मणिमाला से यह लाजे।।

१

आमार माथा नत करे दाओ

आमार माथा नत करे दाओ हे तोमार चरणधुलार तले।
सकल अहकार हे आमार। डुबाआ चोखेर जले।।

निजेरे करिते गौरव दान,
निजेरे केवलइ करि अपमान,
आपनारे शुधु घेरिया घेरिया घुरे मरि पले पले।
सकल अहकार हे आमार। डुबाओ चोखेर जले।।

आमारे ना जेनो करि प्रचार आमार आपन काजे
तोमारि इच्छा करो, हे पूर्ण। आमार जीवनमाझे।।

याचि हे तोमार चरम शान्ति,
पराने तोमार परम कान्ति,
आमारे आडाल करिया दाँडाओ हृदयपद्मदले।
सकल अहकार हे आमार। डुबाओ चोखेर जले।।

मेरा सर झुका लो

मेरा सर झुका लो तुम अपनी चरण-धूलि के तल मे।
हे मेरे अपने! मेरा अह सब डुबाओ अश्रुजल मे।।

स्वय होने गौरवान्वित,
करूँ स्वय को ही अपमानित
अपने आपमे रमते रमते, मरूँ नित पल-पल मे।
हे मेरे अपने! मेरा अह सब, डुबाओ अश्रुजल मे।।

कभी आत्म प्रचार ना हो मेरे अपने कर्म मे,
अपनी इच्छा करो, हे पूर्ण! मेरे जीवन-मर्म मे।

माँगू तुम्हारी चरम शान्ति,
रोम-रोम मे परम कान्ति,
मुझे ओट मे रख विराजो इस हृदय शतदल मे।
हे मेरे अपने! मेरा अह सब, डुबाओ अश्रुजल मे।।

एकटि नमस्कारे प्रभु

एकटि नमस्कारे प्रभु एकटि नमस्कारे
सकल देह लुटिये पडुक तोमार ए ससारे।।

घनश्रावणमेघेर मँतो
रसर भारे नम्र नँतो
एकटि नमस्कारे, प्रभु एकटि नमस्कारे
समस्त मन पडिया थाक तव भवनद्वारे।।

नानासुरेर आकुलधारा
मिलिये दिये आत्महारा
एकटि नमस्कारे प्रभु एकटि नमस्कारे
समस्त गान समाप्त होक नीरव पारावारे।।

हस जेमॅन मानस यात्री
तेमनि सारा दिवस रात्रि
एकटि नमस्कारे प्रभु एकटि नमस्कारे
समस्त प्राण उडे चलुक महामरण पारे।।

एक ही नमन मे प्रभु

एक ही नमन मे, प्रभु, एक नमन मे
समर्पित हो सबकी देह तेरे इस भुवन मे।।

सावन के घने मेघ समान
नम्र, नत लिये रस-भार
एक ही नमन मे, प्रभु एक नमन मे
पडे रहे सभी के मन तेरे भवन-द्वारे।।

सुरो की व्याकुल धाराये
मिल के स्वयम् को भुलाये
एक ही नमन मे, प्रभु एक नमन मे
सभी गीत हो समाप्त मौन पारावार मे।।

हस ज्यो मानस का यात्री
त्यो है सभी दिवस-रात्रि
एक ही नमन मे प्रभु एक नमन मे
सभी प्राण चले उसी महामरण-पारे।।

जीवने आमार जॅतो आनन्द

जीवने आमार जॅतो आनन्द पयछि दिवस रात
सबार माझारे आजिके तोमारे स्मरिबो जीवननाथ।।

जे दिन तोमार जगत निरखि
हरषे परान उठेछे पुलकि,
से दिन आमार नयने होयेछे तोमारि नयनपात।।

बारे बारे तुमि आपनार हाते स्वादे सौरभे गाने
बाहिर हॅइते परश करेछो अन्तरमाझखाने।

पिता माता भ्राता सब परिवार
मित्र आमार, पुत्र आमार
सकलेर साथे प्रवेशि हृदये तुमि आछो मार साथ।।

जीवन मे आनन्द पाये

जीवन मे आनन्द पाए मैंने जो दिन-रात,
सब म तुम्हे स्मरण करूँ, आज जीवन-नाथ।।

जब तेरा जग निरख-निरख
हर्षे प्राण पुलक-पुलक,
तब ही मेरे नयनो मे हुआ, तेरा दृष्टिपात।।

बार-बार मेरे अन्तर मे, गीत, गध, स्वाद से,
बाहर से ही स्पर्श किया, तुमने निज हाथ से।

मातु पिता स्वजन, भ्रात,
मीत, पूत, सबमें व्याप,
करे हृदय मे प्रवेश रहे मेरे साथ।।

यह जो पाया सग तेरा

यह जो पाया सग तेरा, सुन्दर हे। सुन्दर,
पुण्य हुआ अग मेरा, धन्य हुआ अन्तर।। सुन्दर।।

दीप्ति मे ये नैन मेरे
विभोर होके ऐसे खिले,
हृदय- गगन मे है पवन सौरभ से मन्थर।। सुन्दर।।

स्पर्श तेरा पा के मेरा चित्त रजित हुआ,
यह तेरा मिलन-अमिय प्राणो मे सचित रहा।

तुमने मुझे नया किया,
स्वय मे यूँ लगा लिया,
इसी जनम मे दिखा दिया, जन्म-जन्मान्तर।। सुन्दर।।

एइ लॅभिनु सग तव

एइ लॅभिनु सग तव, सुन्दर हे सुन्दर।
पुण्य होलो अग मम धन्य होलो अन्तर।। सुन्दर।।

आलोके मोर चक्षु दुटि
मुग्ध होये उठलो फुटि,
हृद्‌गगने पवन होलो सौरभेते मन्थर।। सुन्दर।।

एइ तोमारि परशरागे चित्त होलो रजित
एइ तोमारि मिलनसुधा रँइलो प्राणे सचित।

तोमार माझे एमनि कॅरे
नवीन करि लॅओ जे मोरे,
एइ जनमे घटाले मोर जन्म-जन्मान्तर।। सुन्दर।।

यह जो पाया सग तेरा

यह जो पाया सग तेरा, सुन्दर है! सुन्दर,
पुण्य हुआ अग मेरा, धन्य हुआ अन्तर।। सुन्दर।।

दीप्ति मे ये नैन मेरे
विभोर होके ऐसे खिले,
हृदय- गगन मे है पवन सौरभ से मन्थर।। सुन्दर।।

स्पर्श तेरा पा के मेरा, चित्त रजित हुआ,
यह तेरा मिलन-अमिय प्राणो मे सचित रहा।

तुमने मुझे नया किया,
स्वय मे यूँ लगा लिया
इसी जनम मे दिखा दिया, जन्म-जन्मान्तर।। सुन्दर।।

अश्रुनदीर सुदूर पारे

अश्रुनदीर सुदूर पारे,
घाट देखा जाय तोमार द्वारे।।

निजेर हाते निजे बाँधा
घरे आधा, बाइरे आधा–
एवार भासाई सध्या हावाय आपनारे।।

काटलो वेला हाटेर दिने
लोकेर कँथार बोझा किने

कथार से भार नामा रे मन
नीरव होये शोन देखि शोन्
पारेर हावाय गान बाजे कोन् वीणार तारे।।

अश्रु नदी के, पार सुदूर

अश्रुनदी के, पार सुदूर—
दीखता है कूल, तुम्हारे द्वारे।।

अपने हाथो से, अपने ही बँधा,
घर मे आधा, बाहर आधा,
अब तो छोड दूँ, अपने आपको, साध्य-हवा मे।।

बीत गये दिन लेन देन मे,
व्यर्थ बातो के बोझ ढोने मे।

बातो का वो भार, दूर कर रे मन
शान्त होकर सुन तो जरा सुन,
उधर बज रहा गीत कौन सा, वीणा के तारो मे।।

मेघ बोलेछे जाबो जाबो

मेघ बोलेछे जाबो जाबो, रात बोलेछे जाई
सागर बोले कूल मिलेछे आमि तो आर नाई।।

दु ख बोले रईनु चुपे
ताँहार पायेर चिह्नरूपे
आमि बोले मिलाई आमि आर किछु ना चाइ।।

भुवन बोले तोमार तॅरे आछे वरणमाला
गगन बोले तोमार तॅरे लक्ष प्रदीप ज्वाला।

प्रेम बोले जे युगे युगे
तोमार लागि आछि जेगे
मरण बोले आमि तोमार जीवन-तरी बाई।।

बादल बोले जा रहा मै

बादल बोले जा रहा मै रात बोले मै चली
सागर बोले मिला किनारा अब तो मै ही नही।।

दु ख बोले मै रहूँ चुप
बन उसीका पद चिन्ह रूप
कहे अहम्, मै लय रहूँ और चाहूँ कुछ भी नही।।

भुवन बोले वरण की यह माला तेरे लिये,
गगन बोले लाखो प्रदीप जलते तेरे लिये।

प्रेम बोले युगो युगो से
जागता हूँ तेरे लिये मै,
मरणबोले खे रहा मै, जीवन नैया तेरी।।

तोमार असीमे प्राण मन लॅये

तोमार असीमे प्राणमन लॅये जॅतो दूरे आमि धाइ–
कोथाओ दु ख कोथाओ मृत्यु, कोथा विच्छेद नाई।।

मृत्यु से धॅरे मृत्युर रूप
दु ख हॅय हे दु खेर कूप,
तोमा होते जबे होइये विमुख आपनार पाने चाइ।।

हे पूर्ण। तव चरणेर काछे
जाहा-किछु सब आछे आछे आछे,
नाइ नाइ भय, से शुधु आमारइ निशिदिन काँदि ताइ।

अन्तर-ग्लानि ससार-भार
पलक फेलिते कोथा एकाकार
जीवनेर माझे स्वरूप तोमार राखिबारे यदि पाइ।।

तेरे असीम मे प्राण मन लिये

तरे असीम म प्राण-मन लिये, जितनी दूर मै जाऊँ-
कही भी न दु ख, न मृत्यु कही भी, कहीं वियोग न पाऊँ।।

मृत्यु, है लेती मृत्यु का रूप
दु ख बन जाता, दु ख का कूप,
तुमसे विमुख होकर निज रूप जब मै निरखता जाऊँ।।

तेरे चरण मे जो है हे पूर्ण।
वही है सब कुछ, हे परिपूर्ण।
भय न कही वो मुझमे केवल तभी तो निशिदिन रोऊँ।

अन्तर-ग्लानि जगत का भार,
पल मे हों सभी एकाकार,
तेरा स्वरूप यदि हे आधार। जीवन मे रख पाऊँ।।

पेयेछि छुटि

पेयेछि छुटि, विदाय देहो भाई–
सवारे आमि प्रणाम करे जाई।।

फिराये दिनू द्वारेर चावी,
राखि ना आर घरेर दावि,
सबार आजि प्रसाद वाणी चाई।।

अनेक दिन छिलाम प्रतिवेशी,
दियेछि जॅतो नियेछि तार बेशी।

प्रभात हॅये एसेछे राति
निविया गेलो कोनेर बाति,
पडेछे डाक चलेछि आमि ताई।।

मिली रिहाई

मिली रिहाई, विदा कर दो
सभी मेरा प्रणाम ले लो।।

लो सभालो घर की चाभी,
रखूँ न मेरा हक कोई भी
आज सभी शुभ वाणी बोलो।।

इतने दिन रहा मै पडोसी
दिया जो भी लिया उससे बेशी।

रात ढली सुबह हुई,
दीपक की भी लौ बुझ गई,
बुलावा है, चला मै अब लो।।

समर्पण-गीत

सूची

गुरु-कृपा जब हुई मुझ पर

गुरु-कृपा जब हुई मुझ पर,
आई ऐसी इक घडी,
छोडा सबने, गया सबकुछ, रहा कुछ भी नही।।

तब जो उनकी करुणा बरसी,
जीवन सरसा, वाणी सरसी
अमृत-क्षण था मेरे लिए वह गुरु ने सुध ली मेरी।।

सो रहा था, उन्होने की दया, ऐसे जगाया
अचेतन था, चित्त मेरा, उसे स्वयम् मे लगाया।

मुझे थमा दी लेखनी फिर
लिखता हू, गाता हूँ फिर-फिर,
सुरति मे रहते सदा वे, पूजा यही मेरी।।

हे गुरु ! तेरे चरण कमल

हे गुरु! तेरे चरण-कमल, तीर्थ से भी पावन।
जग मे वो क्यो डरे, जो ध्याये तेरे चरण।।

तीरथ मे क्या है काम, सारा भुवन है गुरु-धाम,
तीर्थ को भी करे पवित्र, श्री-गुरु क श्री चरण,
गुरु ही ब्रह्मा व विष्णु शिव भवतारण।। हे गुरु।।

सब कुछ गुरु-चरण मे भटकूँ क्यो मै वन मे,
हृदय-कदम्ब बैठे है गुरु, बसी सुनूँ मन मे,
गुरु-ज्ञान है यमुना-नीर, मै हूँ कलश जल-भरण ।। हे गुरु ।।

गुरु-चिन्तन गुरु-ध्यान गुरु मेरे हृदय प्राण
अन्त समय दर्शन दे, गुरु करेगे त्राण
परम गुरु विश्वरूप मर मन-हरण।। हे गुरु।।

गुरु की कृपा

गुरु की कृपा, शिष्य का सम्बल, एक वही तो है आधार।
करते कृपा, कृपानिधि निशिदिन, चातक बनकर चरण निहार।।

गुरु पद रज, रति, सुमिरण, चिन्तन, ध्यान, सभी साधन का सार।
दिव्य दृष्टि हिय हाती, दिखता, प्रभु की लीला यह ससार।।

सब गुरु के जन, सेवा सबकी, सबम गुरु दशन का भान।
हम उनके है वा है मेरे, होता अनुभव बारम्बार।।

चित्त भ्रमित, मन अलसित शकित, अह ग्रसित मति, मलिन विचार।
त्राहि त्राहि प्रभु घर रह रिपु मैं तेरा जन, करूँ गुहार।।

अशरण शरण दयानिधि गुरुवर पात्र अपात्र, न करो विचार।
अविचल भक्ति, सुरति रस भीनी, नयन नमित दो करुणा भार।।

हे गुरु ! तेरे चरण कमल

हे गुरु! तर चरण-कमल तीर्थ से भी पावन।
जग मे वो क्यो डरे जो ध्याये तेरे चरण।।

तीरथ मे क्या है काम, सारा भुवन है गुरु-धाम,
तीर्थ को भी करे पवित्र, श्री-गुरु के श्री चरण
गुरु ही ब्रह्मा व विष्णु शिव, भवतारण।। हे गुरु।।

सब कुछ गुरु-चरण मे भटकूँ क्यो मै वन मे,
हृदय-कदम्ब बैठ है गुरु, बसी सुनूँ मन म,
गुरु-ज्ञान है यमुना-नीर, मै हूँ कलश जल-भरण ।। हे गुरु ।।

गुरु-चिन्तन, गुरु-ध्यान गुरु मेरे हृदय प्राण,
अन्त समय दर्शन द, गुरु करगे त्राण
परम गुरु विश्वरूप, मेरे मन-हरण।। हे गुरु।।

गुरु की कृपा

गुरु की कृपा शिष्य का सम्बल, एक वही तो है आधार।
करते कृपा कृपानिधि निशिदिन, चातक बनकर चरण निहार।।

गुरु-पद-रज, रति सुमिरण, चिन्तन ध्यान, सभी साधन का सार।
दिव्य दृष्टि हिय होती, दिखता, प्रभु की लीला यह ससार।।

सब गुरु क जन, सेवा सबकी सबम गुरु दर्शन का भान।
हम उनके है वो है मेरे, होता अनुभव बारम्बार।।

चित्त भ्रमित मन अलसित शकित अह-ग्रसित मति मलिन विचार।
त्राहि-त्राहि प्रभु घेर रहे रिपु मै तेरा जन करूँ गुहार।।

अशरण-शरण दयानिधि गुरुवर, पात्र अपात्र, न करो विचार।
अविचल भक्ति सुरति रस-भीनी नयन नमित दो करुणा-भार।।

कृपावतार हे

कृपावतार हे! कृपा कटाक्ष तेरा
चित्त शान्त करे और हर विचार सारा।।

तेरा कृपा-सिन्धु-रूप, निखरता भण्डारा मे
सहज कृपा बरसती है, करुणा की रस-धारो मे,
धन्य होता जन समुद्र करके दरस तेरा।। कृपावतार।।

सुना है हर क्षण ही तेरी कृपा का क्षण होता है
सब पे तेरा कृपा-भाव, सभी समय रहता है।

नाथ! फिर भी तेरी कृपा मुझपे क्यो होती नही
मन न तुममे रमता सदा, हृदय म है दु ख यही
अविचल पद-प्रीति आज दे दो, कहो तू मेरा।। कृपावतार।।

तेरी करुणाधारा

तेरी करुणाधारा झरे जहाँ, वही कही पे,
ठाँव मुझे देना जरा, इक किनारे।।

मै कहूँगा न कुछ
माँगूगा न, कभी भी मै कुछ
चाहूँगा बस तेरी दृष्टि के कण कुछ, नैन नीरे।।

मेरी जो शेष वेला,
तेरे उन करुण कणो से पूर्ण होगी।

जब दिन ढलेगा
सामने जब धुँधली राह होगी
तेरे ये कण, उन क्षणो मे पथ दिखायेगे, जीवन तीरे।।

इसे कैसे कहूँ

मैंने तुमसे जोडे चित्त, प्राण, मन, अपने गीता से
इसे कैसे कहूँ, पाया है मैंने, कैसे, कहाँ, तुम्हे।।

तेरी चरण-प्रीति मे ही, प्रीत की सुगन्ध,
तेरी विरद-गीति मे ही, गीत और छन्द
इसे कैसे कहूँ,
है गूढ तेरी बात विविध शब्दो मे, स्वरो मे।। मैंने।।

तेरे सत्-स्वरूप को
मधुर-सुर-प्रकाश मे,
मै निहारूँ

तेरी महिमा चारो ओर छाये
तेरा प्रकाश सबको खीच लाये
इसे कैसे कहूँ
है हृदय म तेरी बात रग बिरगे अनुभवो मे।। मैंने।।

राजी है हम उसी मे

राजी है हम उसी मे, जिसम तेरी रिजा है
ये फैज है तुम्हारा, य ही तेरी फिजा है।। राजी।।

मालिक तुम्हो हमारे बन्दे है हम तुम्हारे
सारे जहाँ मे तुम ही, एक सिर्फ हो हमारे
रहमत तेरी सजा भी, है तेरा प्यार प्यारे
है तेरी ये इनायत, मेहर के है नजारे।। राजी।।

ब्रज से पुकार तेरी, ब्रजराज सुन रहा हूँ
बसी को टेर सुमधुर, रसराज सुन रहा हूँ
सुन्दर स्वरूप तुममे आँखे अटक रही है
हूँ धन्य मै इसी मे, तू दिल मे, दिल तू ही है।। राजी।।

हे गुरुदेव दया के सागर

हे गुरुदेव। दया के सागर, तेरी कृपा-माधुरी बरसे।
बैठे है, सब लोग यहाँ पर तेरी इक चितवन को तरसे।।

प्रेम तुम्हारा कैसा है यह, जिस पर इसकी वर्षा करते,
धन जन मान, सभी भव-बन्धन हरकर उसको हलका करत,
ना अपनाते ना ही छोडते, देख रहे अनदखी करते।। हे।।

ऐसे मे तेरे प्रेमी से, लोग सभी कतराया करते
जग हँसता है वह करता है याद तुम्हे चुपके से रोते,
क्षण भर कृपा-कटाक्ष तभी दे तुम उसको अपनाया करते।। हे।।

मुझे बनाने का यह तेरा, खेल चले क्या और चाहिये
मै तेरा हूँ, हे हृदयेश्वर। तू मेरा, क्या और चाहिये,
रखना नजर सदा तुम मुझ पर कभी न जाना मेरे उर से।। हे।।

निरख-निरख सुख पाऊँ

निरख-निरख सुख पाऊँ
मै पल पल यही मनाऊँ
मिले चरण-रज रति ऐसी
सुमर सुमर मन, उनमे लाऊँ।। निरख।।

मन-मन्दिर मे हो वास तेरा
कर्मों मे हो प्रकाश तेरा
भावो के कण, तुम बिखेरो नित
चुन चुन मै उन्हे, गाता जाऊँ।। निरख।।

ह्रदय-कदम्ब मे बैठ के तुम
छेडा करो बसी की धुन।

तू ही है मेरा, आत्मसखा
मै भी तो तेरा, लीलासखा
सखा मेरे, तेरे तिरछे नयन
साथ-साथ रहे, जहाँ भी जाऊँ।। निरख।।

मुझे अपना बना के

मुझे अपना बनाके जो काँटे चुभोये, करुणा के वे फूल तेरे।
आँसू मेरे गीत लिख रहे, उसी करुण स्मृति से भरे।।

नयन-वारि यही कहे
हृदय मे तेरे चरण रहे
जीवन का आधार बने, मरण मे पलको मे रमे।।

सतत सुरति की रस सुधा पीता रहूँ, कर्म करूँ।
जो भी करूँ कहूँ जो भी, सब मे वही अमृत भरूँ।

आज भी जो मेरी कथा
असीम है वो तेरी कृपा
तात मात, स्वजन, सखा तुम्हीं ज्ञान ध्यान मेरे।।

तुम्हे मै जब अपने गीत

तुम्हे मै जब, अपने गीत मन मे सुनाता हूँ,
ध्यान सा लगता है और, रस मे डूबता हूँ ।।

तेरी शीतल ज्योति मे तब,
तेरे ही रूप, लगते है सब,
मौन, मुखर स्वर तेरे तब, सभी मे सुनता हूँ।।

तब तुम निज बाँसुरी, अन्तर मे बजा देते,
मेरा हृदय काँपता है कहता रोते रोते।

शब्द तेरे, सुर भी तेरे
भाव भाषा सभी तेरे,
जो तुम रचते वही तो मै गीतो मे लिखता हूँ।।

यह पूजा यह अर्चन

यह पूजा यह अर्चन, हमे तेरा स्वरूप दिखाये।
आयोजन हो जब ऐसे स्वय समय थम जाये।

स्वयम् ध्यान चमके तुमसे
स्वयम् ज्ञान निखरे तुमसे
बोधगम्य हो शास्त्र सभी स्वय सहज बन जाये।

गुरु की नयी परिभाषा बनी,
शिष्य की अद्भुत भक्ति-सनी,
परम-सखा बन बातो मे, परम अर्थ समझाये।

कहा तुम्हीने ज्ञान नही प्रेम प्रसाद प्रभु का यही
जीवन का भी भेद यही कृपा करो मुझे समझ मे आये।

माँगू तुम्हारी शान्ति चरम,
प्राण मे तेरी कान्ति परम
शरण मुझे दो चरणा मे, डालो इधर निगाहे।।



दाऊलाल कोठारी

जन्म २४ सितम्बर १९३७

शिक्षा B Sc , Jute Tech, विशारद

एन बी १, नॉर्थ अर्जुनपुर, कोलकाता ५९

प्रकाशित रचनाये

तूने जगाया किस सुबह मुझे, १९९६

तेरे गुलाब की क्यारी मे, १९९८

शीघ्र प्रकाश्य

रवीन्द्र सगीत सुधा (भाग-२)

इसमे रवीन्द्र के कतिपय प्रेम प्रकृति, विचित्र
और देशभक्ति गीतो का हिन्दी गीतान्तरण
एव कुछ स्वरचित समर्पण व राष्ट्रगीत रहेगे।

गीतान्तरण विधा पर व्याख्यान

टैगोर सोसाइटी, जमशेदपुर (१९८८)

रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय (१९९०),

जबलपुर विश्वविद्यालय (१९९१)

आन्ध्र विश्वविद्यालय (१९९८)

गुजरात विद्यापीठ (१९९९)।

गीतो के कैसेट बनाये

श्री अनूप जलोटा, आरती मुखर्जी अनुपमा
देशपाण्डे, श्यामली सेन ऊषा उत्थुप
कल्पना नागर विजय सोनी व अन्य।

एव

पद्मश्री मन्ना डे की कैसेट और C D शीघ्र
प्रकाश्य है